|| શ્રી રમણલાલાય નમઃ ||

श्री महावदास भाई रचित

श्री सज्जन मंडन ग्रंथ

डीजीटल संस्करण

सुरेशभाई कानाणी

7878142900

॥ श्री गिरिराज ॥

अथ महावजी भाई सोरठीआ कृत

श्री सज्जन मंडन ग्रंथ आरम्भ

श्री वल्लभ वर वंश मुकट मणी श्री वल्लभ अवतार ।
श्री वल्लभ युग युग जीवो श्री विठ्ठल राजकुमार ॥

अध्याय - १

सत्य कर्म रूपी थयेलो क्यारो जेने शेष नारायण नी छटादार फेण ऊपर निवास स्थान छे, तेथी पृथ्वी रूपी जेमनु पात्र छे जेने समुद्र रूपी तेल छे, हिमालय पर्वत रूपी जेमां मोटी दिवटे (वाट) रहेली छे, सूर्यनी माफक अभीष्ट वस्तु आपनारो जेमा थी अनेक प्रकार ना काजलो उत्पन्न थाय छे, असुरो रूपी पतंगीया जेमां पड़ीने नष्ट थई जाय छे तेमज सत्य पुरुषो ना समूह जेमने पोताना पवित्र किरणों फेलाव्यां छे एहवो श्री वल्लभजीना प्रताप रूपी शोभितो दीवो त्रणे लोक मां प्रकाशी रह्यो छे ॥१॥

अत्यन्त शोभा वाला व्रजमां सुन्दरीजन श्री गोपीजनना मन रूपी रत्न नी चोरी करवा मां प्रसिद्धं चोर संपत्ति वाला श्री गोकुल मां निवास करनारा, सज्जन पुरुषोना वक्षस्थल ना अलंकार मां शोभिता मणी जेवा, रासना आनंद थी मदमाती वृजांगनाओ साथे कामशास्त्र संबंधी विविध क्रीड़ा करनारा अने पोताना भक्तोना सर्वस्व नी रक्षा करवामा चतुर एहवा श्री विठ्ठलेश प्रभु रूपे विराजता श्री गोकुलनाथजी भूतल ऊपर विराजी रह्या छे ॥२॥

निज भक्तोनी अभिलाषा ने पूरनारा त्रण लोक मां अद्‌भुत रस आपनारा पोताना भक्त जनने सुखपूर्वक प्राप्त थनारा, अने सत्य पुरुषो मंगलना समुद्र रूपी, एवा श्री वल्लभ प्रभुना चरण कमल ने सारी रीत वंदन करीने श्री विठ्ठलेश्वरजी श्री गुसांईजी ना पुत्र श्री वल्लभजीना निर्मल अने सारू फल आपनारा श्री सज्जनोना घरेणा ने सज्जन मंडन नामना ग्रंथ ने कहे छे ॥३॥

नाम मात्र थी जेओ पोताना भक्तोना समग्र पापने दूर करनारा, लौकिक

अलौकिक कामनाने देनार भक्तोनी इच्छा ने शीघ्र पूरण करनारा अने सुन्दर कमल नी अत्यन्त शोभा वाला नेत्र छे एवा श्री वल्लभाधीश प्रभुना पुत्र श्री गुसांईजी नुं स्मर्ण करीने महावजीभाई प्रसिद्ध भक्त विविधि रस वाला सज्जन मंडन ग्रंथ ने करे छे के रचे छे ॥४॥ हुं स्वार्थ मां चतुर न थी, व्याकरण ने साहित्य दृष्टि थी पद छंद अलंकार अने शब्दो जाणवाने असमर्थ छू आ दोषयुक्त छू अने दोष वगरनु छे तेनो विचार करनारी बुद्धि मारा मां नथी, तेम मने बीजा कोई देवनो आश्रय नथी हूं तो श्री गुसांईजी ना पुत्र श्री वल्लभ प्रभुना वे चरण कमलने संग्रहीने बालक जेवी बुद्धि वालो छूं तेवो होईने पण आ ग्रंथ करूं छू ते सत्य छे ॥५॥ संवत् १६७८ ना मंगलकारी फागुण मासमां, श्री विट्ठलेशजीना पुत्र श्री वल्लभ प्रभु श्री गोकुल मां पोताना भक्तजनो साथे विराजी रह्या हता त्यारे वल्लभजी ना बे सेवकोए व्रजपति के शुभ वार्ता प्रसंग ऐवी रीते कह्यो हुतो, ॥६॥ त्याहां कोई एक वैष्णवे, श्री वल्लभजीना चरण कमल मां आसक्त ने कृपाना भंडार रूप एवा कोई वैष्णवोत्तम भगवदी ने प्रश्न कर्यो ॥७॥ वैष्णवे कह्यु के हूं वैष्णवोत्तम भगवदी तमो सज्जन छो, अने श्री वल्लभजी ना चरण कमल मां रहेला पराग ने ग्रहण करनारा छो । तेथी श्री वल्लभना प्रागट्य विगेरे नुं जे चरित्र छे ते मने सभलावो ॥८॥ आ अखुंट ऐश्वर्य वाला अने अनेक प्रकार नी अलौकिक शोभा वाला वृज ना ईश्वर श्री वल्लभजी, पृथ्वी ऊपर मनुष्य स्वरूपे शा सारू प्रगट थया हशे ? ते बधु मने कहो, आप आ श्रीजी नुं चरित्र मने घणुं प्रिय लागे छे ॥९॥ वैष्णवोत्तम भगवदी कहे छे के, हे वैष्णवो ! आप श्रीना प्रागट्य नुं कारण घणुज गूढ़ छे, दरेक ने प्रिय लागे तेवु छे "रसनुं धाम छे" ब्रह्मादिक देवताओं ने पण न समजाय तेवु छे, अने विशुद्ध रसिक जनोना आश्रय रूप छे, हुं जो के बराबर जाणतो नथी मारा हृदय मां श्री वल्लभजी नो यश अने चरण कमल ने धारण करीने हु जेवी रीते जाणु छूं ते तमने कहीश ॥१०-११॥ कृपा रूपी अमृत थी परिपूर्ण पोताना भक्तों रूपी कमल नी पंगती ने खुश करनारा, आ श्री वल्लभ रूपी चन्द्रमा व्रज मां शोभी रह्यो छे ॥१२॥ श्रीमदाचार्य चरण श्री वल्लभाचार्यजी, जेने श्री विट्ठलेशजी श्री गुसांईजी अने विट्ठलेशजी ना

पुत्र श्री वल्लभजी, ए त्रणे एक स्वरूपे विराजी रह्या छे विविधी दैवी कार्य करवा माटे जुदा-जुदा स्वरूप ने धारण कर्यो छे ॥१३॥

पहेला श्री यशोदाजी ना, पुत्र रूपे प्रगट थईने श्री वृंदावन मां अनेक स्वरूप थी, श्री व्रजांगनाओं साथे जेणे रासलीला करी हुती ते व्रज ना अधिपति श्री पूरण पुरुषोत्तम प्रभुए, हमणा पृथ्वी ऊपर आचार्य वेश थी त्रण स्वरूपे प्रगट थईने, विशुद्ध क्रीड़ा करवा माटे इच्छा करी छे ॥१४-१५॥ पहेला श्रष्टिना आरंभ काल मांज भू मंडल मां प्रभुनी अनेक लीला करवानी इच्छा थी "दैवी अने आसुरी" आ प्रमाणे वे प्रकार नी सृष्टि पोताना थीज उत्पन्न थई हुती ॥१६॥ प्रभुना वाम (डावा) अने दक्षिण (जमनी) एवा भ्रगुटी ना भ्रंग थी अर्थात् कृपा कटाक्ष थी "दैवी अने आसुरी जीवों ने माटे उत्पन्न करनारा काल क्रम ने लीधे ते बने सृष्टिओ परस्पर मली गई" अने मोह करनारी माया ने अधीन थई ॥१८॥ हवे काल बलथी प्रेरणा पामेला "दरेक जीवो तेने आधीन थयां" अने माया थी तेमनां चित्त हराई गया छै तेवा ते जीवो व्यक्त युक्त अने अव्यक्त प्रगट नहीं थयेला ते तत्वों मां भटकवा लाग्या ॥१९॥ अने त्यांहां पण माहादेवजी ना कहेला मार्ग रूपी अंधकार थी केवल आंधला जेवा थईने अच्युत भगवान ने बिलकुल भूली गया ॥२०॥ अत्यारे पृथ्वी ऊपर धर्म नो शत्रु "कलियुग आव्यो छे" तेथी दरेक मनुष्य ना चित्त विशेष करी ने भ्रमी रह्या छे ॥२१॥ माहादेवजी ना बतावेला मार्ग थी जेहोना नेत्र अंधकार युक्त बनेला छे । तेवा ते कलियुग ना जीवों मां थी कोई पण मनुष्य प्रभुना स्वरूप ने समजवा ने तेमज तेनी सेवा करवा ने कुशल थयो नथी ॥२२॥ दैवी सृष्टि जे जीवो हता ते पण अहीं कलयुग मां माहादेवजी ना मार्ग ना अंधकार थी नष्ट बुद्धि वाला थईने निश्चय वगर ना थइ गया छे ॥२३॥ कलियुग ना जीवों मां थी कोईक तो वली श्री हरी अने तेमनी विभूती मांथी वनेला देवताओं नुं पूजन अभेद दृष्टि थी करे छे "भक्ति मार्ग ने ईच्छानारा ज्ञानी भक्तों पण स्वप्न मां ए श्री हरी ना स्वरूप ने जाणी सकता नथी ॥२४॥ तेवी परिस्थिती कलियुग मां व्याप्त थइ गई हुती । त्यारे पोताना भक्तो ना कृपासिंधु श्री ब्रजेश प्रभु ने मनुष्य देहनो आश्रय करीने पण म्हारा भक्तों ने स्वरूप सुख

नुं दान करीश, आवा प्रकार नी इच्छा थइ ।।२५।। त्रण स्वरूपों ने धारण करी हुं व्रज मां रमण करीश अने रसरूप व्रजना ईश्वर तरीके मने म्हारा भक्तो ज समजी शकशे बीजी कोइ पण स्वरूप ने जाणसे नहीं ।।२६।। जेनु कुल घणु उत्तम छे अने जेनी मती अत्यन्त प्रभु परायण छे तेवा ब्राह्मणना वंश मां मनुष्य स्वरूपे प्रगट थईने मारा भक्तों नुं हुं प्रिय करीश ।। निवेदन मंत्रनी दीक्षा द्वारा दैवी जीवों ने मारा चरण ना आश्रय वाला करीश ।।२७।। त्यारे ज मारा ते दैवी जीवों दरेक प्रकार ना, ते अलौकिक सुख वाला थशे ।।२८।। वैष्णवोत्तमे कह्युं, हे वैष्णव आवी रीते पोताना भक्तजनो मां आनंद ना हेतु माटे तेमज धर्म नी रक्षा करवा माटे सदानंद श्री कृष्ण प्रभुए आवी रीते विचार करी ने स्वरूप धारण करवा माटे मनमां धार्यु ।।२९।। दूध मां मली गयेलु पाणी तुर्तज दूध जेवु थई जाय छे हवे कोई मोटो मनुष्य पण ते मलेला दूध ने अने जल जुदा पाड़ी शके नहीं ।।३०।। परन्तु ते दूध अने जल ने जेनी तीब्र बुद्धि छे तेवो हंस तुर्तज सुख पूर्वक जुदा पाडी नाखे छे" परन्तु बीजो मनुष्य तो सेकड़ों कल्पनो समय बीती जाय तो पण जुदा पाड़ी शकशेज नहीं ।।३१।।

तेवीज रीते व्रजनी श्रीमंतनी (गोपीओ) रूपी कमलो मां खेलनारा हंस रूपी श्री हरीए उपासना, अने निर्गुण भक्ति रूपी जल अने दूध ने जुदा करवा माटे पोतानी इच्छा करी अर्थात् उपासना अने भक्ति नुं मिश्रण थई जवा थी निर्गुण भक्ति मार्ग नुं स्वरूप समजातुं न हतु । तेथी उपासना सगुण छे अने भक्ति मार्ग निर्गुण छे" तेनु प्रथककरण करवानी इच्छा करी ।।३२।।

इति श्री सज्जन मंडने ग्रंथ श्री गोकुलवासी माहाव विरंचित भक्तार्थ भगवदावतारा नाम प्रथम अध्याय सम्पूर्ण ।।१।।

अथ श्री वल्लभ चरित्र अध्याय बीजो प्रारम्भ करीये छीये

।। श्री मद्वल्लभाचार्यो विजयते ।।

अध्याय -- २

वैष्णवोत्तम कहे छे के भारतवर्ष नी दक्षिण दिशा मां तेलंग नामनो देश कहेवाय छे त्यांहां माहादेवजी नी उपासना करवा वाला केटलाक मनुष्यो माहादेव नी भक्ति करे छे ।।१।। ते देश मां काकर कुंभ नामनुं एक नगर छे अने श्री रंगनाथ प्रभुनी नजदीक ते शहेर आवेलु छे ।।२।। ते नगर मां अच्युत भगवान ना एक महान भक्त गंगाधर पंड्ति, अनेक सोमयज्ञो कर्या तेमने त्रण स्त्रीयो हती, अने त्रणये स्त्रीओथी नव पुत्र उत्पन्न थया हुता, तेमां सद्गुणी अने अति पवित्र आचरण वाला एक वल्लभ नाम ना पुत्र थया ।।३।। गंगाधर दीक्षित ना पुत्र वल्लभ दीक्षित, सर्वनी माफक पोताना विधाना तेज थी शोभी रह्यां छे तेमनु चित्तधर्म रक्षा माटे घणुज पवित्र छे ।।४।। ते वल्लभ दीक्षित ने त्यांहां ब्रह्माजी नी समान वेदशास्त्रना पारंगत धर्ममार्गमांज मनोवृत्ति राखनारा अने सत्य वक्ता, लक्ष्मण दीक्षित नामना पुत्र नो जन्म थयो ।।५।। लक्ष्मण दीक्षितजी नी पत्नि नुं नाम लक्ष्मीजी (ईल्लमागारु) हतु ते सारा गुण वाला रूप अने लक्षण वाला अदेखाई अभिमान वगर ना अने एक साध्वी तरीके प्रसिद्ध हता ।।६।। हवे भगवान जगदीश प्रभुए लक्ष्मण भट्टजी अने लक्ष्मीजी ने (ईल्लमागारु) त्याहां अग्नि स्वरूपे पुत्र भावथी प्रगट थवानो विचार कर्यो ।।७।। हवे एक समय सारा लक्षण जेने प्रिय छे तेहवा लक्ष्मीजी रात्रिअे पोताना घर मां सुता हता, त्यारे साक्षात् प्रभुए आपेलु एक स्वप्न जोयु। स्वप्न मां अति तेजस्वी अने तेजोमय जेमनु स्वरूप छे, तेवा अग्नि भगवान, पवित्र ब्राह्मण ना वेश थी, लक्ष्मण भट्टना पत्नि लक्ष्मीजी ना समक्ष पधार्या ।।८।। अने ब्राह्मण ने उदेशी ने अग्नि भगवाने चंद्रबिंबनी समान आकार वाली तेमज रसथी परिपूर्ण एक रूपानी थाली बे हस्त मां धारण करीने लक्ष्मीजी ने आज्ञा करी ।।१०।। अग्निदेव कहेवा लाग्या के हे लक्ष्मीजी मारा आपेला आ उत्तम रसनुं जलदी पान करो, वैष्णवोत्तम भगवदी कहेवा लाग्या के हे वैष्णव तुरतज लक्ष्मीजी

ए श्रीहरी नी आज्ञा प्रमाणे ते रसनी थाली बे हाथ थी धारण करीने तेमां रहेला उत्तम रसनुं पान कर्यु ॥११॥ प्रभु श्री हरी आशीर्वाद आपीने पधारी गया, लक्ष्मीजी भगवान ना आशीर्वाद ना वचन सांभलतांज एकदम जागी उठ्या अने स्वप्ननी दरेक हकीकत प्रसन्न थता थता पोताना पति श्री लक्ष्मण भट्टजी ने संभलावी ॥१२॥ त्यार पछी आनंद थी परिपूर्ण एवा लक्ष्मीजी ए अतिप्रिय एहवा लक्ष्मण भट्टजी थी गर्भ ने धारण कर्यो अने गर्भ मां भगवान पधारवा थी लक्ष्मीजी नी शोभा मां वधारो थयो ॥१३॥ हवे अग्नि स्वरूप भगवान लक्ष्मीजी ना गर्भ मां सरस्वतीजी साथेज विराजी रह्या छे तेने प्रयाग तरफ पधारवानी इच्छा थई ॥१४॥ ते वखते दक्षिण देश मां अन्य देशनां राजानुं आक्रमण थयु तेथी तेलंग देश ना मनुष्योए काशी तरफ नी यात्रा करवानी तैयारी कीधी ॥१५॥ म्लेच्छो ना उपद्रव थी प्रभु सेवा भक्ति मां बाधा आवशे आवा कारणो थी लक्ष्मण भट्टजी ए पण काशी निवास करवानो निश्चय कर्यो ॥१६॥ अने सहकुटुम्ब यात्रिओं नी साथे काशी तरफ जवा माटे रवाना थया । रस्ता मां जता चंपारण्य नाम ना पवित्र स्थल मां भीमरथी नामनी नदी ना किनारे सगर्भा लक्ष्मीजी ना उदर मां मोटी पीड़ा थवा लागी ॥१७॥ अने तेज थी परिपूर्ण प्रकाश करनारा भगवद रूप अलौकिक एवा ते लक्ष्मीजी ना सात मास ना गर्भ नो तेज वखते स्राव थयो ॥१८॥ विक्रम राजानो संवत १५२९ ना वर्ष मां वैशाख मासना कृष्णपक्ष मां पवित्र एवी एकादसीना दिवसे दरेक आनंद आपनारा मध्य रात्री ना समय मां भक्तों ना पापनो नाश करनारा, अग्नि भगवान, अलौकिक पणा थी श्री वल्लभ स्वरूपे प्रगट थया ॥१९॥ श्री वल्लभ ना स्वरूप मां श्वास नो बहेवार गुप्त रूपे चालतो होवाथी श्री लक्ष्मण भट्टजी अने लक्ष्मीजी बन्ने नो हर्ष जतो रह्यो अने आश्चर्य पाम्या ॥२०॥ श्री लक्ष्मण भट्टजी ए एक सारा कोमल एहवा स्थल मां के ज्यांहां सुख पूर्वक बालक ने कष्ट न पड़े त्यां मृत जाणी पधरावीया अने दुःखी थता लक्ष्मीजी साथे यात्रियो जोड़े चाल्या ॥२१॥ हवे बीजे दिवसे लक्ष्मण भट्टजी ए, आगल मुकाम कर्यो त्यांहां रात्रिए साक्षात् रंगनाथ भगवाने स्वप्न मां पधारी ने लक्ष्मण भट्टजी ए आज्ञा करी ॥ २२ ॥ रंगनाथ भगवाने कहयु के तमो सवारे

उठीने जल्दी थी जे स्थले तमारा बालक ने मुकी आव्या छो त्यां जई बालक ने प्राप्त करी प्रसन्न थता काशी जजों ते बालक थी तमो सुखी थसो ॥२३॥ वैष्णवोत्तमे कहयु त्यार वाद सवारे लक्ष्मण भट्ठजी पोताना परिजन वर्ग साथे ज्यां बालक पधराव्या हतां ते स्थले स्वप्न मां पधारेला भगवान नी आज्ञा थी, प्रसन्न थई जल्दी गया ॥२४॥

ददर्स वालं नयनाभिरां मंद स्मितं कोटि रवि प्रकाशम् सुखाचिषं चंचल नेत्रं पध्मम् सत्यं चरोमति मनोसरं सः ॥२५॥

अने तेमने आनंद आपे तेहवां मंद हास्य करता करोड़ों सूर्यनी माफक तेजस्वी तेजनुं तेज सुख रूप छे तेवा चंचल नेत्र कमल वाला तेमज अनेक कामदेवना मनने हरनारा सुन्दर बालक ना तेमने दर्शन कर्या ॥२५॥ करोंड़ो कामदेव थी पण अधिक शोभावाला अने विविधि प्रकार ना रसोथी मुखार्विंद प्रफुल्लित थयु छे, तेवा स्वाभाविक मंद हास्य करता करोड़ों सूर्य नी माफक तेजस्वी जेमनु तेज सुख रूप छे, तेमज दरेक ना चित ने हरण करनारा पोताना बालक ने जोईने लक्ष्मण भट्ठजी अने तेमना पत्नि बन्ने अनेरा आनंद ने अनुभववा लाग्या ॥२६॥ पोताना जमणा चरणना अंगूठा ने मुख मां पधरावी तेनुं पान करवामां उत्साह वाला अने स्नेह थी परिपूर्ण तेमज चपल ऐवा पोताना विशाल नेत्रोथी सुन्दर बनेला ते बालक ने लक्ष्मण भट्ठजी ए पोताना खोलामां पधरावी ने चुंबन कर्युं अने लक्ष्मण भट्ठजीना पत्नि पण पोताने भाग्यशाली मानी अपूर्व आनंद अनुभववा लाग्या ॥२७-२८॥ लक्ष्मण भट्ठजी ए प्राणथी पण व्हाला एवा पोताना बालक ने पोतानी पत्निना खोला मां पधराव्या अने माताए पण अत्यन्त व्हाला एवा बालक ने स्तनपान कराव्यु, अने रस्ते पड़्या ॥२९॥ वैष्णवोच :– के हे भगवदीय माहानुभाव ज्यारे आ बालक ने वन मां पधराव्या हता, त्यारे ते बालक वनमां शी रीते रही शक्या अने त्यां शु कर्युं, आ बधु सांभलवानी मारी तीव्र इच्छा छे, माटे विस्तार पूर्वक मने समजावो ॥३०॥ त्यारे ते वैष्णवोत्तम उवाचः- के, हे वैष्णव अग्निना स्वरूप वाला ते बालक ने मृत समजीने ज्यारे वन मां पधरावी आव्या त्यार पछी त्यांहां शुं थयु ते संबंधी चरित्र तमने कहुं छु ॥३१॥

तत्र संन्ति श्रुभा देव्यो रसरूपाः शुभाशयाः सर्वा गोपकुमारी भिर्ध्रुपम दी कृता पुरा ॥३२॥ त्यांहां केटली एकं विशुद्ध रसवाली अने पवित्र अंतःकरण वाली देवीयो रहे छे, श्री कृष्णावतार बखते अनन्य पूर्वा गोप कुमारीओ ए, आ देवीओ नो अंगीकार कर्यो हतो अर्थात् उपरोक्त प्रभुना स्वरूप मां आशक्त देवीओ ने रसरूप श्री कृष्ण प्रभुनो साक्षात्कार करावता माटे इच्छा करी हती, परन्तु भगवद इच्छा न होवाथी ते समये ते देवी भक्तोने प्रभुनो साक्षात्कार थयो नहीं ॥३२॥ ते दरेक देवीओ ने दर्शन आपवा माटे अग्नि स्वरूपे श्रीकृष्ण प्रभु अलौकिक रूप धारण करीने चंपारण्य मां आखी रात्रि बिराज्या अने देवीओ ने कृतार्थ करी ॥३३॥ वैष्णवोवाच :-- ते के ते दैवीओ क्यां थी आवी हती ? तेओ ए शुं पुण्य कर्युं हतुं ? के जेथी ते व्रजना ईश्वर श्रीकृष्ण प्रभुने अग्नि स्वरूपे दर्शन आपवु पड्यु ते विस्तार पूर्वक समजावो ॥३४॥

इति श्री सज्जन मंडने श्री गोकुलवासी माहाव विरंचितम श्री वल्लभाचार्यो प्रागट्य निरूपणे नाम द्वितीयो अध्याय सम्पूर्ण ॥२॥

अध्याय -- ३

वैष्णवोत्तमे कहयुं के पूर्वकाल मां विष्णु भगवानना भक्त एवा अग्निकुमार मुनिओ, ब्रह्माजी ना पुत्रपणा ने प्राप्त थया हता, अने सारा वृत वाला तेमज तपस्वीओ हता ॥१॥ पितानी आज्ञा न मानी तेथी समग्र अग्नि कुमारो गोदावरी नदीना तीर ऊपर भगवान श्रीहरी नी सेवा करवा गया हता के जेमनाथी नित्य सुखनी प्राप्ती थाय ॥२॥ हवे पोताना पिता दशरथनी आज्ञा ने पालण करनारा श्री रामचन्द्र भगवान सीताजी अने लक्ष्मणजी नी साथे पंचवटी ना वन मां पधार्या ॥३॥ त्यांहां ऊपर जणावेला भगवानना भक्तों अग्निकुमारो ए अति तेजस्वी एवा श्री रामचंद्र ना एक दिवसे दर्शन कर्या ॥४॥ जेमनी डावी तरफ श्री सीताजी एक कुलांगना तरीके विराजी रह्या छे, अने जमणी तरफ धनुष धारण करनार शेषावतार लक्ष्मणजी विराजी रह्या छे ॥५॥ तेमज साक्षात श्रीकृष्ण नो जाणे आवेश ना होय तेवा सुन्दर नेत्र वाला श्री रामचन्द्रजी ना दर्शन करीने अग्निकुमारो

परस्पर कहेवा लाग्या -- अही अस्पर्श योग मां रसात्मक प्रभुनी प्रसाद रूपा शक्ति नुं तेमने दर्शन थयुं छे तेथीज विह्वल थई रसवसं थकां पति थवानो वर माग्यो छे। वर आपनारा प्रसाद रूपा शक्तिजी रसात्मक स्वरूप ज्यां छे, न के रामचंद्रजी। रामचंद्रजी तो ते समें अस्पर्श योग ना टेरा भीतर छे एम समजवु ॥६॥ के आ सीताजी आवा श्री रामचन्द्रजी साथे निरन्तर रमण विहार करे छे तेथी ते घणाज भाग्यशाली छे आवा भाग्य आपणा क्यां थी होय के जेथी नित्य सुखनो अनुभव थाय ॥७॥ अग्निकुमार विस्मित देहानुसंधान होवा थी आ कोण दर्शन करूं छू ते न समजता अचानक प्रसाद रूपा शक्ति जी नुं पधारवुं न समजता पूर्व स्मृति पूर्वक परस्पर बोलता होवा ना आभा रूप देखी तो समजाय छै ते मूल श्लोक संस्कृत मा पण ब्रजेशावेश पूर्ण पाठ छै वास्तव मां तो श्री रसात्मक प्रभू नी प्रसाद रूपा शक्ति ना दर्शन थीज तेमने काम भाव भर्ता भाव प्रगट थयो छे नै तेओने वर देवा वाला दर्शन देवा वाला मूल रसात्मक प्रिय ना प्रसाद रूपा शक्ति जी छै न के रामचन्द जी या स्वतन्त्र लेख, सर्वोत्तम स्तोत्र स्पष्ट विवरण तथा व्रत चर्या का दर्शन करवा थी वधारे स्पष्ट थई सकासे ॥७॥ वैष्णवोत्तम आज्ञा करे छे के :-- आवी रीते अग्नि कुमारो ने **रामोव्रजेश्ववेश पूरितः** ॥८॥ प्रसाद रूपा शक्ति ना स्वरूपों मां आशक्ति थई, ते बखते प्रसाद रूपा शक्ति जी ए जेमना मन काम भाव थी रसिक बनी गया छे, तेवा अग्निकुमारो सामे कृपा दृष्टि करी अने आज्ञा करी के हे अग्निकुमारो तमो अत्रे शा माटे आव्या छो ? तमारा मन मां शी इच्छा छे ते तमो मने कहो, हुं तमारा ऊपर प्रसन्न थयो छूं तमारी इच्छा पूर्ण करीश ॥९॥ अग्निकुमारो ए कहयुं, आपना चरणकमल ना चरणामृत नी प्रार्थना अमे करीए छीए, आप तो अंतर्यामी छो एटले बधु जाणो छो अमो वधारे शुं कहीए ? ॥१०॥ वैष्णवोत्तमे कहयु :-के आवी रीते श्रीरामचंद्रजी अने अग्निकुमारो बच्चे वार्तालाप थई रह्यो हतो, ते बधु सीताजी सांभलता हता, सीताजी तरतज वचमां बोली उठया, के हे अग्निकुमारो एक पत्नि वृत ने पालन करनारा, श्री रामचंद्रमां तमो ए आवी बुद्धि करी छै तेथी तमो "अविद्याना मुखमां पडजो" ॥११-१२॥ वैष्णवोत्तमे कहयुं के आवी रीते

करुणाना भंडार श्री रामचंद्रजी सीताजी ना श्राप युक्त वचन ने सांभली ने सीताजी ऊपर क्रोध करता कहेवा लाग्या ॥१३॥ श्रीराम उवाच :- श्री रामचंद्रजी ए कहयु के हे निष्पाप सीताजी, तमे आ वैष्णव अने साधु तरीके प्रसिद्धी पामेला अग्निकुमारो ने शा माटे श्राप दीधो ? तेओ तो विशुद्ध रस वाला छे अने असाधारण तेजथी जगत ने प्रकाश आपनारा छे ॥१४॥ आवी रीते सीताजी ने कहीने, श्री रामचंद्रजी ए मन मां विचार्यु के, हुं तो आ अवतार मां व्रज मां रास करी शकूं नहीं, तेमज आ अग्निकुमारो तो मारा मां केवल मनने परोवीने म्हारी भक्ति करी रह्या छे अने तेथी तेमना दरेक पाप नाश पाम्या छे, माटे तेओने रास रसनुं सुख आपवु जोइए ॥१५-१६॥ आवी रीते निश्चय करी श्री रामचंद्रजी ए ते विशुद्ध रस वाला ब्रह्माजी ना पुत्रो ने अग्निकुमारो ने आज्ञा करी के तमो सर्वे सारस्वत कल्प मां पूर्ण मनोरथ वाला थशो ॥१७॥ (सीताजी मर्यादा पुरुषोत्तमनी स्वामिनी छे तेओ सांभली रह्यां छे) - परस्पर वार्ता किन्तु अस्पर्श योग मां पधारेला प्रसाद रुपा शक्तिजी ना दर्शन के तेमनो अनुग्रह ना रहस्य थी अज्ञात होईने श्राप आपी दीधो, अने राघवे क्रोध कर्यो तेमां सीताजी ने कहयुं छे के तमो मारा स्वर ने पण ओलखीने आ प्रसाद रूपा शक्ति मां आशक्त अने वर प्राप्त विशुद्ध रस वाला अग्निकुमारो प्रति अन्याय कर्यो छे केम के जे अमो तो ओ रस स्वरूप नी रसात्मक शक्ति थी अस्पर्श योग मां रहेला छु अमोने एहोनां दर्शनानंद पण दुर्ल्लभ छे तेवा प्रसाद रूपा शक्तिजी तेमने वर आपीने सारस्वत कल्पमां प्रगट थवानी निज इच्छा स्पष्ट दर्शावी रहयां छे तेथी राघवे क्रोध कर्यो ओ देखीतुज स्पष्ट छे । वली आ प्रसंग बहु ऊंडी द्रष्टे जोवानो छे मर्यादा अने पुष्टि ना सूक्ष्म भेद ऊंडी मीटे , जोवाथी समज पड़े ।) हवे सीताजी ए जे श्राप आप्यो छे ते पण सत्य करवा माटे , पोताना स्वरूपमां थी ईर्षाना स्वरूप वाली अविद्या ने उत्पन्न करी, अने अग्निकुमारो ना कल्याण माटे भगवान अविद्या ने कहेवा लाग्या ॥१८॥ श्री रामचंद्रजी कहे छे के, ज्यारे सारस्वत कल्प आवे त्यारे ते दरेक अग्निकुमारो ने स्त्री ना स्वरूप थी उत्पन्न करी मने आपशो, कारण के तेओना मन बुद्धि विगेरे मारा मांज धारण करायेलां छे ॥१९॥ वैष्णवोत्तम कहेवा लाग्या

के श्री रामचंद्रजी नी आज्ञा थी अग्निकुमारो राजी थता पोताना आश्रम मां गया अने भगवान पण पिताजी ना वचननी अवधि पूर्ण थता, सीताजी अने लक्ष्मण साथे अयोध्या मां पधार्या ।।२०।। हवे अग्निकुमारो तो साक्षात स्वरूप हता एटले सीता जी नो श्राप लाग्यो नही परंतु ज्यारे रसस्वरूप नु तिरोधान थयु त्यारे तेमना श्रापनी असर थइ ।।२१।। अने ज्यारे सारस्वत कल्प प्राप्त थयो त्यारे ते अग्निकुमारो प्रभुनी इच्छा थी, गौड़ देश मां स्त्रीओ थया अने जंगल मां सात्विक भावथी रहेवा लाग्या ।।२२।। अने केटलाक दैवी पुरुषो पण व्रजमां गुर्जर नामनी जातिमां उत्पन्न थया, तेमज श्रीहरि पण श्री नंदजी ना घर मां व्रजेश्वर स्वरूपे प्रगट थया ।।२३।। हवे ते तरफ ना वन मां केटलाक गोवालियाओ गौड देश तरफ गया हता तेओ अ सुन्दर कन्याओ ने जोई अने नंदराय जी नी आज्ञा नुसार ते कन्याओं ने व्रजमां लाववानो उद्यम करवा लाग्या ।।२४।। हवे ते तरफ ना वन मां केट्लीक रसप्रिय देवीओ वसे छे, तेओ उपर्युक्त कुमारिकाओं (अग्निकुमारो) नी मनवचन अने कायाथी सेवा करवा मां तल्लीन वन्या छे ।।२५।। ते देवीओनी सेवाथी जेमना अंतःकरण घणाज संतुष्ट थया तेवी रीते सघली कुमारिकाओं प्रसन्न थई ने देवीओ ने सुख थाय ते प्रमाणे कहेवा लागी ।।२६।। गोप कुमारिकाओ ए कहयु के हे देवीओ हवे अमो सर्वश्रेष्ठ ऐवा नंदालय मां जईशु अने त्या प्रसंग प्राप्त थता तमो दरेक ने बोलावी शुं ।।२७।। वैष्णवोत्तम कहे छे के :— त्यार पछी नंदरायजीनी आज्ञा प्रमाणे जे गोवालीया आव्या हुता तेओ सुन्दर अने प्रसन्न थयेली नानी नानी कुमारिकाओ ने लइने व्रज मां आव्या ।।२८।। अने ते गोपकुमारिकाओ ने पूर्व जन्म मां जे काम भाव उत्पन्न हतो, ते विविध कामनाओं व्रज मां नाना नाना बालको रूपे उत्पन्न थया, अने ने सीताजी ना श्राप प्रमाणे अविद्या रूपी पूतनाना मुख मां नष्ट थई गया ।।२९।। हवे प्रसन्न थयेली गोप कुमारिकाओ ने गौड़ देशनी निवास करनारी वनदेवीयो ने जे वरदान आप्यु हतु, ते माटे व्रजेश प्रभुए विचार्यु ।।३०।। अने त्यार पछी श्री हरि कृष्ण प्रभुए, अग्नि स्वरूपे प्रगट थईने चंपारण्य ना निर्जन वनमां समग्र भक्तिनिष्ट देवीयो ने, पोताना दर्शन नो साक्षात्कार कराव्यो ।।३१।। एटला कारण माटे जे लक्ष्मण

भट्टजी ने त्यां अग्नि स्वरूपे प्रभु प्रगट थया ते जन्म बखते श्वास रहित अर्थात् गुप्त स्वास वाला हुता, तेथी माता पिताए मृत समजी ने वन मां पधरावी दीधा अने ते समय रात्रि मां गोप कुमारीनी आज्ञा प्रमाणे, दरेक वनदेवीओ ने तेणे दर्शन आप्या ।।३२।। त्यार बाद स्वप्न प्राप्त भगवान नी आज्ञा थी, लक्ष्मण भट्टजी पोताना पुत्र ने पधरावी ने यात्रालुओनी साथे प्रवास करवा लाग्या, बालक व्हाला लागवा थी तेमनु नाम वल्लभ राखवा मां आव्युं ।।३३।। त्यार बाद पिताजी ए तेमने सातमे वरसे उपवित आप्युं, अने विद्याभ्यास शरू कर्या थोड़ाज समय मां तेओ ए बधी विद्या भणी लीधी ।।३४।।

इति श्री सज्जन मंडने ग्रंथ श्री गोकुलवासी माहावदास विरंचित श्री वल्लभाचार्य वर्णनो नाम तृतीय अध्याय सम्पूर्ण ।।३।।

।। श्री गोकुलपति जयति ।।

अध्याय -- ४

वैष्णवोत्तम कहे छे के, हवे आप श्रीना पिता पोतानी ज्ञातिना श्री लक्ष्मण भट्टजीए सुयोग लक्षण वाला पंडितनी पुत्री महा लक्ष्मीजी साथे आप श्री ना लग्न कर्या अने लग्न पछी तरतज आप श्री सेवा अर्थ परिक्रमा करवा पधार्या ।।१।। हवे स्वच्छ वस्त्र ने धारण करता श्री वल्लभे एकला पृथ्वीनी परिक्रमा शुरू करीने त्यां घणा पंडितो तेमज करमां माटी ना कमण्डल ने धारण करनारा सन्यासीओ नी साथे शास्त्र नो वाद थता, तेमने जीत्या ।।२।। आप श्री ए मारवाड़, मगध, सिंध, अंग, बंग (बंगाल) कलिंग सुर अने कैकट देशो ना पंडितो ने ज़ीत्या ।।३।। दक्षिण देश मां कृष्णराय नामना राजाए श्री वल्लभाधीश नो आवो अलौकिक प्रताप जोई ने घणाज आदर पूर्वक कनकाभिषेक कर्यो पण तेमा स्वामी श्री वल्लभाधीश सर्व सुवर्णनो त्याग करीनेज आगल पधार्या ।।४।। क्रमे क्रमे आगल बधता श्री वल्लभ भगवान, श्री विट्ठलनाथजी ना धाम मां (पंडरपुर) पधार्या, त्यांहां श्री विट्ठलनाथजी (पांडुरंग विट्ठलनाथजी) अने श्री वल्लभ बन्ने ए, आंखों मां बड़े समस्या थी वारता करी समाचार पूछ्या ।।५।। श्री विट्ठलनाथजी ए श्री वल्लभ ने वचनों थी कहयु के माहारी एहवी अद्‌भुत इच्छा छै के तमे पिता थाओ अने

हु तमारो पुत्र थाउं ।।६।। पछी श्री वल्लभ, श्री विठ्ठलनाथजी थी विदाय थई धीमे धीमे श्री गिरिराज अने गोपीजनों थी बड़े सुशोभित वृंदावन मां आव्या ।।७।। हवे श्री वल्लभाधीश श्री गिरिराज नी सन्मुख पधार्या, त्यारे श्रीनाथजी हर्षित थई ने स्वेच्छा ए सामा आवी पोताना मित्र श्री वल्लभ प्रभुने गाढ आलिंगन आपी परम आनंद पाम्या ।।८।। श्री गोवर्धननाथजी ना सारी रीते दर्शन करता, तृप्ती पाम्या नहिं तेमज श्री गोवर्धन धरण पण पोताने त्यांहां पधारेला श्री वल्लभ ने निरखता तृप्ति पाम्या नहिं ।।९।। जेम कोई माणस आदर्श दर्पण मां पोतानुं सुन्दर जोई प्रसन्नता पामे छे तेम गोवर्धन ना दर्शन करी आ श्रीवल्लभ आनंद पूरित थया, अति प्रसन्न थया ।।१०।। श्री गोवर्धनाधीश अने श्री वल्लभ ए बन्ने ना मन मां अनेक प्रकार ना जे जे अलौकिक भावो उत्पन्न थया हशे, ते केवा प्रकार ना सुखदायक हशे ते हूं जाणी वर्णवी शकुं तेम नथी ।।११।। विप्र तनु धारी श्री वल्लभ श्री गोवर्धन धरण साथे, श्री वृन्दावन नी शोभा जोईने घणुज अलौकिक सुख पाम्या, हवे ते वृन्दावन नी शोभा केवी छे तेनु वर्णन करे छे त्यां, वृन्दावन सुन्दर पत्र फल फूल थी भरपूर दिव्य वृक्षो थी शोभायमान छे संपूर्ण बसंत बिगेरे सुगंधी पुष्प बड़े छये ऋतुए जेमा निवास करी रही छे केतकी, मालती, जाई जूई युधिका विगेरे सुगंधित पुष्पो बड़े शणगाराएलु छे, त्यां भमरा अने भमरीओ जेनी आसपास गुंजारण करी रह्या छे कला पूरण मयूरो ना नृत्य अनेरी शोभावाला छे, ब्रह्मा इन्द्र बिगेरे देवो बड़े अप्राप्त अने विशुद्ध मन वाला ने कामनाओमां थी रहित रसिक जनो ने लीला रस आपनारु ते प्रभुनु रमणधाम छे, के जेमा त्रणे लोकनुं सौंदर्य आवेलु छे आवा अलौकिक वृन्दावनना स्थलो मां श्री गोवर्धन धरण श्रीकृष्ण अने श्री वल्लभ श्री गिरिराजजी सनमुख रही परस्पर वारता करवा लाग्या ।।१२-१७।। आ प्रमाणे श्री वल्लभ श्रीनाथजी साथे बिराज्या छे, त्यांहां श्रीनाथजी ए आज्ञा करी के मने गृहस्थाश्रम प्रिय छे आ वेश जे ब्रह्मचारी नो तमे जे धारण करी रह्या छो ते मने गमतो नथी ।।१८।। वली महादेवजी ए प्रगट करेला अमार्ग मायावाद बड़े, जेमना मन दुःखित थयेला छे तेमने विविध प्रकार ना ग्रंथो ना उपदेश वडे निर्दोष करो ।।१९।। जेम पतिव्रता स्त्री पोताना पतिने अनन्य भावे भजे छे, तेम सर्वे दैवी जीवो एमना नाथ एवा

मने, अनन्य भावे भजे, एवा तेमने करो, तमो मने प्रिय छो, माटे आ कार्य तमने सोपुं छु ॥२०॥ तमे आ सत्कार्य नी सिद्धि माटे सरस्वती ना आचार्य थाओ अने तमारा सदुपदेश थी ते सर्वे (कली ना जीवो दैवी) मारी सेवामां आशक्ति वाला थशे ॥२१॥ तेने हुं सदा सुलभ छु जे जीव असर्मपितनो त्याग करी मारू अनन्य भजन करतो सतसंग करतो, मारू अर्चन मारी सेवा करशे, तेने हूं सदा मारो करीश ॥२२॥ सदाचरण पालवा थी मान, क्रोध, लोभ विगेरे तजवाथी, दैन्य पनाथी अने निद्रा तथा चिंताना त्याग थी जीव मने प्रिय बने छे ॥२३॥ त्यारे माणसोना (ते जीवोना) पाप पुण्य नो क्षय थई जाय छे जीवो निःसाधन बनता तेमने मारा मां पतिवृत्तानो अनन्य भाव थतां हूं तेमने हमेशा सहेलाइ थी मलुं छूं ॥२४॥ जेम व्रजांगनाओ ए मारी अनन्य भावे भक्ति करी हती तेना अनन्य भावो थीज स्त्रियों के पुरुषो मारी भक्ति करे छे ते साधु पुरुषो मने वहाला छे महादेवजी ना मायाबादमां मोह पामेला सघला दैवी जीवों जेमनी मिथ्या संगती थई रही छे तेवा दैवी जीवो ने तेमाथी छोडावी तेमने म्हारा समक्ष अनुग्रह मार्ग ना निवेदन करावी प्रवेश करावो, आपे अथवा आपनी आज्ञा प्रमाणे चालनारा दैवी भक्तों ए मने निवेदन करेली वस्तु मने घणी प्रिय लागे छे, ते वीजाए अर्पण करेला बहु मूल्यवान होय, तो पण मने रूचती नथी ॥२७॥ दैवी सृष्टि मां उत्पन्न थयेला जीवो भगवद रास लीला ना अनुभव माटे योग्य छे, अधिकारी छे अने तेमना संग मां आवनार बीजा जे छे, तेओ तेमना संगना प्रभावे मोक्षना अधिकारी थशे ॥२८॥ ब्राह्मणादि चार वर्ण मां जे दैवी जीवों उत्पन्न थायछे तेमने जलदी थी म्हारी सेवा मां प्रवृत्त करो हूं तेओने म्हारा अलौकिक स्वरूप नुं परम सुख आपीश ॥२९॥ वैष्णवोत्तम उवाच :-- हे वैष्णव, जेम देहधारी नुं चित्त शरीर मां रहेला जीव ने पोताना मननी बात कहे छे, तेम गोवर्धनधरण प्रभुए पोताना मननी आ बात स्वरूपात्मक एवा श्री वल्लभ ने कही ॥३०॥ आ प्रमाणे श्री गोवर्धन धरण ना वचनो सांभली जगदीश जगदीश्वर श्री वल्लभाचार्य जी ते प्रभुनी परिक्रमा करी, पोताना मुकाम तरफ जलदी थी पधार्या ॥३१॥

इति श्री महावजीभाई विरंचित सज्जन मंडन ग्रंथे श्रीनाथजी श्री वल्लभ संवादे चतुर्थ अध्याय सम्पूर्ण ॥४॥

॥ अथ श्री गोकुलेशो जयति ॥

अध्याय -- ४

वैष्णवोत्तम उवाच :-- सर्व शास्त्र मां पारंगत एवा प्रभु श्री वल्लभाधीश जीये नाना प्रकार ना ग्रंथोनी रचना करी, के जेनाथी परिशील नथी, निज भक्तना समस्त सुखों नी सिद्धि थाय, अने एमने अलौकिक सुख नी प्राप्ति थाय ॥१॥ पछी श्री आचार्यजी ए श्री गोवर्धननाथ जी नी सेवानो मार्ग प्रगट कर्यो, तेमा मर्यादा (आश्रमोनी) तथा आचार सचवाय विविध प्रकार निरांधण कलानो रस सचवाय अने जेमां अनेक ललित कलाओं पूर्वक राग स्नेहनी वृद्धि थाय ॥२॥ पछी श्री आचार्यजी ए काशी नी नजीक अडेल मां निवास कर्यो, त्यांहां थी बारंबार श्री गोवर्धन पधारी, श्री नाथजीनी सेवा सहित दर्शन करी, आप श्री पाछा पोताना आश्रम मां पोधारता ॥३॥ आ प्रमाणे अग्निरूप एवा श्री वल्लभाधीशे एक तरफ थी श्री गोवर्धन धरण नी सेवा करीने बीजी तरफथी नाना प्रकार ना ग्रंथों रच्या, अने एथी दैवी जीवोंने श्रीकृष्ण सेवा ना रसिक बनाव्या ॥४॥ करोड़ों सूर्य समान जेनी कांति छे, एवा द्विज श्रेष्ठ श्री वल्लभ प्रयाग मां रहीने वेदशास्त्र नुं सार, सदउपदेश थी पोताना पुष्टि मार्ग (कृपा मार्गनी) विस्तार कर्यो ॥५॥ अने परम कृपालु श्री वल्लभ पोते महादेवजी ना मायावाद मां मग्न एवा देवी जीवों ने पोतानुं दास्य आपता थका, पोताना निवास स्थान मां आपना धर्मपत्नि श्री अक्काजी साथे ग्रहस्थाश्रम मां रहेवा लाग्या ॥६॥ पछी ए भगवान (श्रीवल्लभ) गंगाजीना किनारे चरणाद्रि नामनुं शुभ पवित्र नगर छे तेमां सहकुटुम्ब निवास करी रहेवा लाग्या ॥७॥ हवे श्री वृन्दावन मां, गिरिराजजी सान्निध्य मां रहेता (विराजता) श्री व्रजनाथे मनमां कृपापूर्वक विचार कर्यो ॥८॥ अमारा अग्निस्वरूप प्रगट थयेला श्रेष्ठ ब्राह्मण रूपे रहेला श्री वल्लभ ने त्यांहां पुत्रभावे प्रगट थई म्हारा भक्तोना उद्धार माटे हुं अलौकिक लीला प्रगट करीश ॥९॥ माटे श्री वल्लभ ने घरे प्रथम ना अग्रं **प्रस्थापिष्यामि बलदेव ततः** बलदेव स्वरूपने श्री गोपीनाथजी ने प्रगट करू अने त्यारे पछी हु जे केवल धर्मी स्वरूप छु ते तेमना

नानाभाई तरीके प्रगट थईश ॥१०॥ ते हु विट्ठल एवु नाम धारण करी म्हारा
शरणे आवेला मारा दैवी भक्तों ना म्हारा चरणारविन्द नो आश्रय आपी नाना
प्रकार नुं अलौकिक सुख आपीश ॥११॥ करोड़ों कामदेव पण जे स्वरूप मां
मोह पामी जाय, एवा म्हारा मदन मोहन रूप मां ते भक्तो ने दर्शन करावीश
आम निश्चय करी श्री व्रजेश श्री गोवर्धननाथ जी मनमां खूवज प्रसन्न थया ॥१२॥
पछी श्री विट्ठलनाथजी ए श्री वल्लभ दीक्षितने स्वप्न मां कहयुं के तमारा सेव्य
स्वरूपे छुं तेज हुं तमारा पुत्र तरीके प्रगट थवानो छुं ॥१३॥ त्यांहां बे बालक
प्रगट थशे ते बालको पैकी बराबर छे बीजो बालक ते मुने (हु ने) जाणजो
ते बालक नु नाम श्री विट्ठल राखजो तेनाथी तमने घणुज सुख मलशे ॥१४॥
आ स्वप्न जे श्री वल्लभ ने पाछली रात्रे आव्युं हतु ते बात आप श्रीए प्रातःकाल
थता, श्री महालक्ष्मीजी ने जणावी तेथी प्रभुनी आ उक्ति थी श्री वल्लभ तथा
श्री महालक्ष्मीजी बेहुने अनेरो आनंद थयो ॥१५॥ हवे श्री वल्लभ दीक्षितना पत्नी
श्री अक्काजी ए गर्भ धारण कर्यो, अने समय पूर्ण तथा तेमने एक बालक
जन्म आप्यो ॥१६॥ ते दिव्य बालक नुं नाम गोपीनाथ एवु प्रिय नाम राख्यु योग्य
काल प्राप्त थता, श्री अक्काजी ए फरी बीजो गर्भ धारण कर्यो ॥१७॥ जगत
प्राणीमात्र ना अंतरात्मा साक्षात् श्रीकृष्ण भगवान जगतना श्रेष्ठ अधिपति अक्काजी
ना गर्भ मां विराज्या त्यारे, साध्वी अक्काजी असाधारण अलौकिक तेजथी शोभवा
लाग्या ॥१८॥ साक्षात श्रीकृष्ण प्रभु श्री वल्लभाचार्यजी ने त्यां प्रादुर्भाव
त्यारे विक्रम संवत् १५७२ मु वर्ष हतु पौष मास नो कृष्णपक्ष हतो हस्त
हतु, नवमी तिथि ने शुक्रवार हतो, शोभन नामनी योग हतो, तेतल नामनु
हतु, वृषभ नामनु लग्न चलतु हतु, सूर्य अने बुध आठमां स्थान मां हता,
भुवन मां गुरु हतो, पुत्र भुवन मां चन्द्र हतो धर्म भुवन मां एटले नवम
केतु हतो, स्त्री भुवन मां शनि, शुक्र, मंगल हता, अने मंगलकारी सौम्य त्रीजा
स्थान मां राहु हतो त्रणे लोक मां प्रकाश करनारा श्री गुसांईजी, अने मंगलकारी
सौम्य त्रीजा स्थान मां राहु हतो त्रणे लोक मां प्रकाश करनारा श्री गुसांईजी
श्री विट्ठलनाथजी नुं प्रागट्य थयु त्यारे सूर्योदय थी ईष्ट घड़ी एकवीसनी

॥१९-२०॥ संवत १५७२ पौष कृष्णपक्षे नवा भृगुवासरी हस्त नक्षत्रे शोभन योगे, तैतल करणे, सूर्योदया द्रष्टि थाय ॥२१॥ ते समये श्री वल्लभाचार्यजी ना पुत्र श्री विट्ठलेश्वर नुं प्रागट थयु पोताने त्यां पुत्र रत्न प्रगट थयानी अमृत थी अधिक शुभ बधाई सांभली श्री आचार्यजी अद्भुत आनंद वान संपूर्ण देह वाला बन्या अने त्यांहां पोते ते उमंग मां विचार्या विना, द्विजो ने अनेक प्रकार ना दान आप्यां अने जेवी रीते भगवद प्रागट्य समये श्री नंदरायजी ना आंगण मां मंगलकारी महोत्साव थयो हतो तेम अहीं नाना प्रकारनां मंगल बाजित्रो नो सुन्दर घोष थवा लाग्यो ॥२२॥ प्रेमना आंसु बड़े जेमना नेत्र परिपूर्ण थई गया छे एवा श्री वल्लभाधीशे आ नाना बालक नुं सर्वने आनंद आपनार तणो सर्व सौभाग्य ने धारण करनार श्री विट्ठलेश एवुं नाम राख्युं आथी माता अक्काजी सर्वे आनन्द थी पूरित थयां अने सर्वे सेवक जनो, अने इंद्र, शिव, ब्रह्मा, विगेरे स्वर्गना देवताओं, पण सर्वे आनंद थी परिपूरित थया ॥२३॥ हवे रमता खेलता श्री विट्ठलेश्वर सात वर्ष ना थया, त्यारे पिताश्री ए वेदोक्त रीत अनुसार, विधि पूर्वक आपश्री ने उपवित संस्कार कर्यो ॥२४॥ श्री विट्ठलेश उपवित धारण कर्या पछी क्रमेण सर्व विद्या संपादन करी, अने एमने अतुल ज्ञान स्वतः प्रगट थयु ॥२५॥ हवे श्री विट्ठलेश योग्य वयना थता, आपश्री ना लग्न आपनी ज्ञातिना कोईक पंड्ति देवताना परम शोभावाला कन्या रुक्मिणी साथे करवा मां आव्या ॥२६॥ त्यार पछी आपश्रीए अशेष पंड्तिो साथे शास्त्र चर्चा करी विजय प्राप्त कर्यो । अने पोताना वैष्णवोना संदेहोने आपनी सुन्दर वाणी थी दूर करी, नित्यं सुखनो अनुभव कराव्यो ॥२७॥ हवे श्री विट्ठलेश तो छः मास अडेल मां विराजता अने छः मास श्री गोवर्धनेश नी पासे गिरिराज मां विराजता आ प्रमाणे स्वभक्तों ने अति हर्ष आपता विराजता हवे पुष्टि जगत ना स्वामी श्री विट्ठलेश ने त्यांहां संतान थया, त्रण पुत्रों अने त्रण पुत्रिओ, पछी सातमा बालक नु प्रागट्य शीरीते थयो, तेनो सर्वे प्रकार हु हवे तमने कहुं छु ॥२८॥ श्री विट्ठलेश्वर आचार्ये दरेक बालक ना वेदोक्त रीति अनुसार जातकर्मादि संस्कारो कर्यो तेमज भगवाने सोपेलु भक्तोने (दैवी जीवोने) अंगीकार करवानु कार्य पण कर्युं ॥२९॥ वली भक्तों ना मन हरण करनारा अने

मायावादी प्रखर पंड्तिोरूपी गजराजो ना कुंभ स्थल ने चीरी नाखवा मां कुशल एवा सिंहनी माफक श्री विट्ठलेश्वर विराजवा लाग्या ॥३०॥ हवे भक्तों नो अंगीकार करवा माटे , एक अद्भुत पुत्रने प्रगट करवा माटे श्री विट्ठलेश प्रभुए मन कर्यु ॥३१॥ हवे श्रीमद् कृष्णावतार एवा श्री विट्ठलेश प्रयाग मां श्री यमुनाजी ना तीर ऊपर वास कर्यो ते दरम्यान श्री रुक्मणीजीए श्री विट्ठलेश्वरजी थी गर्भ ने धारण कर्यो, अने ते अलौकिक गर्भ ने कारणे श्री रुक्मणीजी ना मुख कमल ऊपर त्रणे लोकनी शोभा झलकवा लागी अने आप अद्भुत बनीने गर्भ ने धारण करवा लाग्या ॥३२-३३॥ त्यारे व्रजना ईश्वर एवा प्रभुए श्री विट्ठलेश्वर ने स्वप्न मां पधारी, आप श्री ने कह्‌यु के हुं व्रजेश्वर तमारा थी श्री रुक्मणीजी ना गर्भ मां आव्यो छुं, जगत ने माहामंगल करवा वाला श्री व्रजाधीश गर्भ मां पधार्या छे, ते जाणी श्री गुसांईजी तथा श्री रुक्मिणीजी घणाज प्रसन्न थया ॥३५॥ पछी व्रजना देव एवा श्री विट्ठलेश्वर श्री गोवर्धननाथना दर्शनार्थ तथा स्वभक्त ना कार्य करवा माटे गिरिराज जी पधार्या ॥३६॥

इति श्री गोकुलवासी श्री महावजी विरंचितं सज्जन मंडन ग्रंथे पांचमो अध्याय सम्पूर्ण ॥५॥

॥ श्री गोकुलेशो जयति ॥

अध्याय -- ६

वैष्णवोत्तमे कहयुं के हे वैष्णव विक्रम संवत १६०८ नुं वर्ष चालतु हतु सूर्य दक्षिणायन मां विचरी रह्‌यो हतो, हेमंत ऋतुनो प्रथम मास कार्तिक थी आरंभ थई मागसर मास चली रह्‌यो हतो सुखकारी शुक्लपक्ष हतो ॥१॥ सप्तमी तिथि अने शुक्रवार हतो पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र हतु ॥२॥ घड़ी एक सूधी सिध्ध योग हतो, त्यार पछी सांध्य योगनी तैयारी हती ॥३॥ एम साध्य योग हतो वणिज नामनु करण हतु सुद्रव वर्ण हतो गो योनी अने हरिण नो वर्ग हतो अने मिथुन राशि नु लग्न हतु जन्म कुण्डली मां धन भुवन मां गुरु हतो भ्रातृ भुवन मां राहु हतो,

शत्रु भुवन मां बुद्ध हतो स्त्री भुवन मां मंगल हतो, शुक्र अने सूर्य हतो, ए त्रणे ग्रहो हता ॥४॥ धर्म भुवन मां शनि चन्द्र, केतु एम त्रणे ग्रहे हता, रात्रिना आदि भागनी एक घड़ी ने (५६) पल (छप्पन पल) थया हता ॥५॥ त्यारे आवी रीते दरेक विश्व ने आनंद आपनारो सर्वत्र मंगल करनारो समय प्राप्त थयो, स्वर्ग मां पण समग्र साधु महात्माओं ना मन प्रसन्न थया ॥६॥ तेवा मंगलमय समये श्री विट्ठलेशजी ना शोभाजी बेटीजी पण ते समये हाजर हता ॥७॥ अने श्रीमदाचार्य चरण नी जेमना ऊपर कृपा हती, तेवां अने श्री गुसांईजी नुं हित चाहनारा, कृष्णा (कृष्णादासी) नामना कोई वयोवृद्ध दासी पण हाजर हता ॥८॥ आवी रीते ऊपर जणावेली ज्योतिष शास्त्रनी, अने लौकिक वहेवारनी परिस्थिति हती, त्यारे श्री विट्ठलेश्वर ना पत्नि श्री रुक्मणीजी ना उदर मां सहन न थई शके तेवी पीड़ा थवा लागी पासे रहेला अनुभवी स्त्रीजनोंए घणाज उपचारो कर्या तो पण पीड़ा शांत न थई, त्यारे कृष्णादासी नामना दासीअे श्री रुक्मणीजी ना उदर ऊपर पोतानो पवित्र हाथ फेरववा लाग्या त्यारे तरतज श्री रुक्मणीजी ए जगत ना समर्थ उद्धारक एक पुत्र ने जन्म आप्यो ॥१०॥ आनंद ना एक पूर भंडार जेवा कमलनी अंदर ना भागनी माफक अरुण नेत्र वाला सुन्दर नासिका वाला मंद हास्य जेनु मुखकमल शोभी रहयु छे तेवा बालक ने माता श्री रुक्मणीजी हर्ष पूर्वक जोवा लाग्या ॥११॥ अने करोड़ों कामदेव ना जेवी सुन्दर शोभा वाला, करोड़ों सूर्य ना तेज जेमना कपोल ने गलस्थल मां प्रकाश करी रह्या छे तेवा तेमज दशों दिशाओं मां प्रकाश करनारा पोताना पुत्र ने जोईने माताजी घणाज खुशी थया, ते समय कृष्णा नामनी दासीजी मनावता थका बोल्या "हो आतो म्हारो साक्षात श्री गोकुलनाथ छे", त्यारे स्नेहाल कृष्णा दासीना वात्सल्य अने स्नेह थी ते बालक नुं नाम श्री गोकुलनाथजी राखवामां आव्यु ॥१२॥ परम भगवदीय श्री कृष्णाबाई ए, तुर्तज श्री गुसांईजी ना ज्येष्ठ कुमार गिरधरजी ने अमृतमय अक्षरो ना उच्चार थी प्रागट नी बधाई आपी, अने ते सामलता गिरधरजी ए अंतःकरण मां घणोज आनंद अनुभव्यो ॥१४॥ हवे श्री विट्ठलेश्वरजी श्री गुसांईजी नी हवेली मां अनेक प्रकार ना मंगल वाजित्रो वाग्या लाग्या अने अनेक वैष्णवो

ना मंगलकारी शब्दो थवा लाग्या ॥१५॥ आ बखते श्री विट्ठलेश्वरजी श्री गुसांईजी
श्री गिरिराज मां श्री ठाकोरजी नी सेवा मां विराजता हता त्यांहां एक अनुप
हंसता हंसता कर्ण ने अमृतमय वाणी थी पुत्र प्रागट्य नी मंगल बधामणी आ
श्री गुसांईजी ए वधाई सांभली ने पोतानी सफलता मानी ॥१६॥ अने पछी प्रस
मन वाला श्री विट्ठलेश्वरजी, श्री गुसांईजीए, पुत्र जन्मनी बधाई लावनार अनुप
ने एक घोड़ो, वस्त्र पुष्कण धन अने अलंकारो आनंदथी भरपूर थईने आ
पूर्वक दान कर्यो ॥१७॥ अने शास्त्र ना उत्तम ज्ञान धरावनार, ब्राह्मणो ने अ
प्रकार ना बहुमूल्य दान आप्या ते बखते श्री विट्ठलेश्वर, श्री गुसांईजी त्रण लो
ना ईश्वर, जेवाज लाग्या ॥१८॥ हवे कमलना जेवु जेनु मुख प्रफुल्लित छे
श्री विट्ठलेश्वर प्रभुए श्री गिरिराज थी पौताना मुकामे अड्डेल पधारवानो वि
कर्यो अने हर्ष थी परिपूर्ण थईने भक्तो ना मनोरथ ने पूर्ण करवा लाग्या ॥
व्रज ना पति साक्षात श्री पुरुषोत्तम प्रभु म्हारे त्यां अनेक सुखने आपवा प
छे आवी रीते हर्षना वेग थी मनमां विचार करता थका श्री विट्ठलेश्वर जी पोता
मुकाम स्थल श्री अड्डेल पधार्या ॥२०॥ त्यार पछी श्री विट्ठलेश्वरजी ए प्रस
पूर्वक पोताना नवजात पुत्र ने जोईने घणाज वहाला लागवा थी वल्लभ ना
पाड्यु आथी दरेक वैष्णव वर्ग तो श्री गोकुलनाथजी अने श्री वल्लभ एव
नाम थी घणाज प्रसन्न थया आनंद पाम्या ॥२१॥ हवे श्री विट्ठलेश्वरजी ए बा
नो जातकर्म संस्कार, प्रीति पूर्वक कर्यो अने प्रसन्न थईने विद्वान ब्राह्मणो
घणा दान आप्या ॥२२॥ ते समय हर्ष थी परिपूर्ण एवा युवती जनो ए,
रस वाला विविधी प्रकार ना मंगल गीतो गाया अने अपसराओं ए पोते पो
परिकर साथे आवीने, सुन्दर नृत्य कर्यु तेमना नृत्य वादना शब्दो दरेक ने
लाग्या ॥२३॥ दरेक मनुष्य ना सुख ना स्थान रूप रत्न जड़ित आभूषणो
शणगारेला, अने सुखासान थी बिराजी ने दरेक ने मोह उत्पन्न करनारा ते अ
बालक ने निरखी निरखी ने माता श्री रुक्मणीजी घणाज आनंद ने पाम्या ॥
दरेक पातोना जन समूह ने हर्ष आपता ते श्री बल्लभजी मोटा थवा लाग्या
माताना विविध प्रकार ना लालन पालन थी छः मासना थया ॥२५॥ अने बाल

भावथी पोताना पुत्र श्री वल्लभ मां जेमनी मती परोवाई गई छे, जेवा श्री विठ्ठलेश्वर ना पत्नि श्री रुक्मणीजी पोताना पतिनी सेवा मां परायण थतां पुनः सगर्भा थया ॥२६॥ हवे तुरतज रुक्मणीजी ए बहुरी नामनी एक बालको ने खेलावनारी बाई ने बोलावी ने कहयु के म्हारा बालक श्री वल्लभ ने तु पधरावी जा अने स्तन पान करावी ने, लालन पालन थी पोषण करजे ॥२७॥ श्री रुक्मणीजी नी आज्ञा प्रमाणे बहुरी नानी बाई कमलना जेवा मुख वाला बालक ने पधरावी ने लालन पोषण करवा लागी, एक दिवस माताए बहुरी पासे खेलता पोताना बालक ने दुबला जोईने, चिन्ता करवा लाग्या ॥२८॥ के मने शीघ्रथी प्रसव थई जाय तो, ते जन्मेला बालक ने धात्री (धाव) दासी ने सोंपी दउं तेमज बहुरी दासी पासे थी म्हारा वल्लभ ने पधरावी ने सुखपूर्वक स्तन पान करावीश ॥२९॥ वैष्णवोत्तमे कहयु के त्यार बाद गर्भनो आठमो मास चालतो हतो, त्यारे श्री रुक्मणी जी ए सुन्दर अंग वाली एक कन्या ने जन्म आप्यो, अने ते बेटीजी नु नाम देवका राखवा मां आव्यु, पोतानी इच्छा फलित थवाथी श्री रुक्मणीजी ए बहुरी दासी ने बोलावी ने देवका बेटीजी ने लालन पोषण माटे पधरावी दीधा अने तेनी पासेथी पोताना पुत्र श्री वल्लभ ने पधरावी लीधा, त्यारे प्रसन्न मुख वाला बालक ने जोईने श्री रुक्मणीजी आनंद सागर थी परिपूर्ण थवा लाग्या ॥३०-३१॥

इति श्री गोकुल वासी महावदास भाई विरंचित श्री सज्जन मंडन ग्रंथे छटो अध्याय सम्पूर्ण ॥६॥

॥ श्री गोकुलेशो जयति ॥

अध्याय -- ७

वैष्णवोत्तम कहेवा लाग्या, हवे श्री वल्लभ हस्त ने जानु थी रमता रमता घुटणीए चालवा लाग्या, तेवा ते बाल वल्लभने जोईने श्री रुक्मणीजी अने श्री विठ्ठल तात अने बीजा वैष्णवो आनंद पामवा लाग्या ॥१॥ सेवा सुखना दाता श्री गोकुलनाथ, सत्य पुरुषो ने भक्तजनों ने सारी रीते रमाड्ता, अने पोते आवी

बाल लीलाथी रमता रमता देहली (उबरो) ओलंघता ओलंघता नीचे पड़ी जाय छे अने पडीने ते समय सत्वर ऊभा थई जायछे, जे भगवान वामन अवतारमां एक चरणारविन्द थी आखा विश्व ने उल्लंघन करवा मां दक्ष हता तेवा आ श्री गोकुलेश पोताना नेत्र कटाक्षने सुन्दर हास्यो थी सर्व ने आनंद आपता, हास्य पूर्वक क्रीड़ा करे छे ॥२॥ अनेक प्रकार नी बाल लीला करवा लाग्या, एक सुन्दर रूपवाली अने सुन्दर लक्षणो वाली वयथी पूर्ण अत्यन्त प्रियतम श्री वल्लभ ने व्हाली गुर्जर देशनी एक दासी स्त्री के जेनु नाम दामोदर दासी हतु, ते श्री रुक्मणीजी ने व्हाला श्री गोकुलनाथजी नी सुन्दर स्नेह पूर्वक आनंद प्रेम भाव थी, सुन्दर रुचिकर सेवा करती हती ॥३॥ ते दामोदरदासी ना वचन थी, श्री गोकुलेशजी जेम सुखी थाय, तेम नृत्य करे छे ते समय कटी किंकणी ने नेपुरनो नाद थाय छे, तेम जेम ते दामोदरदासी चुटकी बजावे छे, चुटकी बजावी, नृत्य करी रमाडे छे ॥४॥ सुन्दर मंद हास्य करता, सुन्दर शोभा आपनार बे दुधीया दांत के जे विस्तार थी रोपण करनारा छे अने मोह पमाड्नारा छे तेवा ते बे दंत, श्री वल्लभ ना मुखारविन्दमां शोभी रह्या छे ॥५॥ ते दामोदरदासी अत्यन्त आनन्दित थई, प्रीति थी ते बाल वल्लभ प्रभु ने चुम्वन करे छे, बली ए बाल वल्लभ ना श्रीहस्त जेहना कंठ मां छे एवा श्री वल्लभ ने पोताना हृदय कमल मां रमण रूपे धारण करे छे, रात्री ए सुन्दर निर्मल एवी सारा ऊंचा गाल मशुरीया ने शीराणा वाली सुन्दर सिज्जा मां, नाना प्रकार ना आनंद ने, रसीला भाव मां कुशल ने सारी युवावस्था ना भाव संयुक्त ते दामोदरदासी ते प्रियने साथे पोढ़े छे (उंघे छे) ॥६॥ मंद मंद अंगना रोपण (बाल) समान, चंचल नेत्र कटाक्ष छे तेवा ते ईश्वरेश्वर श्री गोकुलनाथजी ना श्रीहस्त कमल पकड़ी ने चलाववा माटे ते दामोदर दासी प्रभुन्ना बन्ने श्रीहस्त धारण करे छे बालभाव थी श्री हस्तनी अंगुली पकड़ी चलावे छे, एम श्रीमद गोकुलनाथ पोतानी ते दासी ने पोताना बे हाथ नी अंगुलीओ आपी ने चाले छे अने अंगुली नी शान थी बोलाववानो प्रयत्न करे छे, अने पोताना पितृचरन ने बंधुओं ने प्रिय कइक कालु कालु सुन्दर वचन बोले छे ते श्री वल्लभ बाल भाव थी हास्य युक्त थइ प्रिय लागे तेवु निरन्तर

अस्पष्टता थी ''बोदड़दासी'' एहवा वचन थी ते दामोदर दासी ने बोलावे छे आवी रीते बाल्यावस्था मां कौमार लीलानो आश्रय करीने करोड़ों कामदेव जेवा नेत्र वाला ते श्री वल्लभ ते श्री दामोदरदासी जी साथे घेर घेर खेलवा पधारे छे कोई पण कार्य तेनाथी हमेशा प्रीति जे जगत ने मोहित करी नाखे तेवा श्री गोकुलनाथ पिताश्री विठ्ठलनाथजी अने माता श्री रुक्मणीजी ने प्रीति उत्पन् थई ते प्रीति करावता, ''ताता ताता'' एवा वचनों बोले छे अने बीजा भक्तजन सज्जनों ने ए बल्याभावाश्रित श्री गोकुलानाथ, हास्यपूर्वक अवलोकनो थी अने प्रिय वाणी ना समूह रूप वचनामृतो थी अने खिलोनाथी सुखदान करी रहेला छे ॥९॥ आम बाल क्रीड़ा करता श्रीमद् वल्लभ पौगंड अवस्था मां आव्या त्यारे श्री विठ्ठलनाथजी पितृ चरणे वेदोक्त विधि थी यज्ञोपवीत (जनोइ) आप्यु ॥१०॥ उपवित सहित श्री वल्लभ जी ने निरखीने माता श्री रुक्मणीजी ने निज जनो आनंदित थया अने श्री गोकुलेश अगीयार बरसना थया, ते जाणीने पोतानो अद्‌भुत भाग्य नी अंकुर प्रगट थयो तेम मानवा लाग्या ॥११॥ ते गढ़ा नगरी मा एम त्रण वरस पर्यन्त श्री वल्लभे क्रीड़ा करी विभूरूप श्री विठ्ठलनाथजी श्री गुसांईजी कुटुम्ब सहित हरिवंशजी आदे सेवकों अने बीजा केटलाक भक्तजनो सहित गढ़ा नगरी मां पधार्या ॥१२॥ श्री वल्लभ त्या अंगना भेदमां चतुर, नृत्य ह्रदय स्पर्श, ने सुन्दर भाषणो थी सुन्दरीजनों ने मोह पमाड़ता, क्रीड़ा करवा लाग्या ॥१३॥ एम त्रण वरस गढ़ा रही लीला करी अने पछी श्री यमुना किनारे मथुरा पुरी मां जवानी इच्छा करी ॥१४॥ अच्युत एवा श्री गोकुलेशजी ने चौदह वर्ष पूर्ण थया, त्यारे श्री विठ्ठलनाथजी कुटुम्ब सहित मथुरा पुरी मां पधार्या ॥१५॥ संवत् १६२२ ना शुभ मास मां श्री विठ्ठलनाथजी ए सुखपूर्वक श्री मथुरापुरी मां निवास कर्यो ॥१६॥ कमलो ना भ्रमरो नी क्रीड़ाथी सुन्दर एवा श्री यमुनाजी ना तटने जोईने श्रीमद् विठ्ठलनाथजी ने श्रीमद् वल्लभ पोतानो रुचिकर मानी आनंद मानवा लाग्या ॥१७॥ मथुरा नगरी पासे प्रिय श्रीमद् वृन्दावन आवेलु छे अने श्री गोवर्धन ना ऊपर श्री गोवर्धननाथजी के जे सुन्दरीओ ना जूथो थी वेष्टित बिराजे छे ॥१८॥ कुटुम्ब सहित श्री विठ्ठलेश प्रभुने आवेला जोईने व्रजवासीजनों अने बीजा वैष्णवों जेओ

त्यांहां रहेतां हता तेओ आनंद नुं पान करवा लाग्या ॥१९॥ त्यांहां मथुरापुरी मां वेद स्मृति विगैरे नो ज्ञाता एक सौमदत्त नामनो पंड्ति, ज्ञान विशारद रहेतो हतो ॥२०॥ त्यांहां ते पंड्ति ने घरे ते समय श्री विट्ठलनाथजी ए एवा बालक प्राणवल्लभ श्री वल्लभ ने सुविद्या भणवा माटे मोकलवा लाग्या ॥२१॥ श्री विट्ठलनाथजी तातजी नी आज्ञा थी शुभ योग तारा ने सारा ग्रहो जोई, शुभ दिवसे ईश्वर एवा श्री वल्लभे सुविद्या भणवा माटे ते विद्या आरंभ शुरू कर्या ते सोमदत्त नामना ब्राह्मण गुरु ए, जेम आज्ञा करी तेम श्री वल्लभ स्वमुख थी भणवा लाग्या ॥२२॥ पछी ते श्रीमद् वल्लभ घरे आवीने सर्वे ने आनन्ददायक श्रीमद् भागवत नुं अवलोकन करवा लाग्या ॥२३॥ बीजा ब्राह्मण बालको घोष करीने हमेशा भणे छे परन्तु जेना मुखारविन्द मां विद्याए स्थिति करी छे एवा श्री गोकुलेशजी पठण मां भणवा मां आसक्त थया नहीं ॥२४॥ ते ब्राह्मणना बालकों श्री विट्ठल कुमारे माटे संदेह वाला थईने श्री वल्ल्भ नु वृत्तान्त पोताना गुरुने कहेवा लाग्या ब्राह्मण बालको गुरुने कहे छे के हे गुरुदेव ! श्री वल्लभ हमेशा तमारू भणावेलु भणता नथी अने घरे जइने पोताना मनने प्राणो थी बीजु पुस्तक जुए छे विचारे छे ॥२५॥ वैष्णवोत्तम कहेवा लाग्या ए प्रमाणे ते ब्राह्मण बालको नुं वचन सांभली ने गुरुए श्री वल्लभ प्रभुने पूछी जोयु तो श्री वल्लभे पहेला जे गुरुए भणाव्यु हतु ते बधु तेमना आगल बोली गया ॥२६॥ श्री वल्लभ ते गुरुनु भणावेलु बोली गया ते सांभली ने गुरु तो घणों विस्मित थयो तेथी एक दिवसे तेमनी घरे परीक्षा अर्थे गया ॥२७॥ त्यांहां जई एकान्त मां रहीने तेमनी श्रीमद् भागवत नी निकलेली अमृत समान वाणी ने सांभली ने ते गुरु अत्यन्त विस्मय पाम्या ॥२८॥ पछी ते गुरु विस्मय पामी विस्मय थी आवेश वाला गुरु तरतज तेमनी पासे आवी तेमना चरणारविन्द मां दासनी पेरे पड्या ॥२९॥ पछी ते गुरु सौमदत्त कहे छे मिथ्या पंड्ति मानी हुं छु तेथी मारा अपराध क्षमा करो, तमे ईश्वर छो अने हुं आपनो शिष्य छुं । हे जगत गुरो, तमो म्हारा गुरु छो ॥३०॥ सोमदत्त गुरु आगल कहे छे हे जगत प्रभु तमे सत्य नाम धरावनार श्री गोकुलेश छो तमो सर्वना कल्याण रूप वृजवल्लभ छो ॥३१॥ हुं तो मनुष्य छुं

ने आप तो देव छो हुं तो मूढ़ छूं अने आप सर्वज्ञ छो तेथी हे अच्युत आप अपराधी एहवा म्हारा ऊपर कृपा करवी जोइए ।।३२।। वैष्णवोत्तम कहेवा लाग्या आ प्रकारो थी श्री गोकुलेश आगल स्तवन करीने ते सोमदत्त गुरु श्री विट्ठलनाथ जी पासे गयो, अने तेमना युगल चरण कमल ने वंदन करीने वचन कहेवा लाग्यो ।।३३।। सोमदत्त कहे छे आ तमारो बालक मनुष्य नथी पण द्विज रूपधारी गोकुल ना नायक पुरुषोत्तम तेज साक्षात वल्लभ रूपे प्रगट थया छे ।।३४।। आ तमारा वल्लभ मां स्मृति वेद विगैरे नी स्थिति छे अने श्रीमद् भागवत ना आश्रय वाला छे तेमने तो पहेला वाकपति रूपे चौदह विद्याओं भणेली छे ।।३५।। वैष्णवोत्तम कहेवा लाग्या ए प्रमाणे स्तुति करी ने ते सौमदत्त गुरुए शिरसा दंड्वत कर्या श्री विट्ठलनाथजी ने अनेक वार नमस्कार करीने फरी बोल्यो ।।३६।। सोमदत्त कहे छे करोड़ों वर्ष पर्यन्त आ तमारो पुत्र श्री गोकुलनाथ, चिरंजीव रहो एवु तमने म्हारा आशीर्वाद नु वचन आपु छुं ।।३७।। वैष्णवोत्तम कहेवा लाग्या सोमदत्त गुरु आ प्रमाणे आशीर्वाद आपीने पोताना आश्रममां गया अने श्री गोकुलेश ना माता पिता अने बीजा बधा सज्जनो ते जोईने आनंद पाम्या ।।३८।। एवो रीते मनुष्य रूप धारी ते श्री हरिरूप श्री वल्लभे लोकरीत अनुसार बधी विद्याओ भण्या ।।३९।। आप आ ब्रज स्त्रीओ थी आच्छादित थयेलो साक्षात श्री जगदीश श्री वल्लभ लोकनी रीते, लोक अनुसार अनेक लीलाओ करे छे, मथुरापुरी मां आ प्रमाणे विद्याभ्यासादि अनेक लीला करे छे ।।४०।।

इति श्री सज्जन मंडन ग्रंथे सातमो अध्याय सम्पूर्ण ।।७।।

।। श्री गोकुलेशो जयति ।।

अध्याय -- ८

वैष्णवोत्तम कहेवा लाग्या हवे श्रीमद् वल्लभ धीमे धीमे पंद्रह वरसना थया ते समय नवीन युवावस्था थी माधुर्यता प्राप्त करीने रस थी भरपूर थया ।।१।। सर्वज्ञ एवा श्री श्री विट्ठलनाथजी तात आचार्ये पोताना वयथी पूर्ण एवा श्री वल्लभ

पुत्र ना विवाह माटे आदरपूर्वक प्रयत्न करवा लाग्या ॥२॥ आ प्रांतना सर्वे मंडलमां क्यांये कन्या देखाती नथी पिता श्री विट्ठलनाथजी अने भ्राताओं सर्वे तेनी चिन्ता मां आतुर थया ॥३॥ एटला मां पोतानी जातीना तैलंग देशना कोइक श्रेष्ठ ब्राह्मण त्यां प्रभु इच्छाथी निवास करवा ने माटे मथुरापुरी मां आव्या ॥४॥ जे ब्राह्मणनी साधवी पत्नि रुक्मणी छे, अने एक पार्वती नामनी तेमने त्यां कन्या छे श्री विट्ठलनाथजी ए ते ब्राह्मण ने मान आप्यु अने त्यां निवास करीने रहेवा लाग्या ॥५॥ हवे एक दिवसे ते ब्राह्मण श्रेष्ठ वेणाभट्टजी ए श्रीमद् वल्लभनी जन्म-पत्रिका कोई मनुष्य द्वारा मंगावी ॥६॥ ते वेणाभट्टजी ए श्रीमद् वल्लभ नी मंगलरूपिनी जन्म पत्रिका जोइ अने तेज समय आ योग्यवर आपण ने मल्यो छे जोईने सगा वहाला सहित पोते आनंद प्राप्त कर्यो, आनंद पाम्या ॥७॥ ते वेणाभट्टजी ये ते माणस द्वारा श्री विट्ठलनाथजी ने वचन कहेवडाव्यु के हूं तमारा सुत श्री वल्लभ ने म्हारी कन्या आपीश ॥८॥ पछी सारा शुभ मुहूर्त मां श्री पदमावतीजी सहित श्री विट्ठलनाथजी प्रभु ए हलदी सहित अग्यार सोपारी ग्रहण करीने आव्या तेने वेणाभट्टजी ए हस्तांजली थी वधावी लीधा ॥९-१०॥ बन्ने वेवाईओ ए ते सोपारी फल ने परस्पर एक बीजानी अंजुली मां आपले करी विनियोग कर्यो वर कन्या ना विवाह नु वचन आपीने ॥११॥ व्रजना भूषण रूप श्री गोकुलनाथजी सोलह बरसना छे अने ते पार्वती बहुजी सात वर्षना छे ते समये त्या बन्ने ना विवाह नो सर्व सुखदायक दृढ़ निश्चय थयो ॥१२॥ श्री गुसांईजी श्री विट्ठलनाथजी ए ज्योतिषाचार्यो ने बोलावी लग्न नुं पूछ्यु ते ब्राह्मणो ए श्री वल्लभ ने योग्य विचारी ने लग्न काढ़ीने कहयु ॥१३॥ के संवत १६२४ ना आषाढ़ वदी बीजने गुरुवार शुभ लग्ननुं मुहूर्त आव्युं छे ॥१४॥ पछी श्री विट्ठलनाथजी ए पोताना पुत्र श्री वल्लभना विवाह ना प्रस्तावनो आरम्भ कर्यो ॥१५॥ ते विवाह प्रस्ताव माटे पहेला नवीन विविधि प्रकार ना आभूषणों गढ़ाववा आप्या अने अनेक प्रकार ना सुन्दर वस्त्रो तैयार कराववा मांड़्या ॥१६॥ श्री विट्ठलनाथजी ए आनंदित थई ने लग्न निकट आवता अमूल्य मोती हीरा माणेक मंगाव्या ॥१७॥ आचार्य चरणनुं सुख विचारनारी कृष्णादासी ए आनंद प्राप्त थयो एने श्री विट्ठलनाथजी नुं सुख

विचारनारी गुजराती गौरी नामनी दासी पण सुखानंद पामी ॥१८॥ श्री वल्लभ ना सगा वहाला नो संघ अने सत्य पुरुषों ने अने साधुजनों पण आ विवाह नी वारता थी आनंद पाम्या ॥१९॥ नाना प्रकार ना आभूषणों अने वस्त्री धारण करीने ज्ञाति जननी रसभरित स्त्रीजनो मंगलगान करता श्री गोकुलेशजी ना श्री अंग पीठीथी उबटना करवा लाग्या ॥२०॥ आनंद मां आवी जई चित्र विचित्र नाट्यथी आभूषित थयेली ते स्त्रीओ मंगल गान करवा लागी तेनो अने वाजित्रोनो निर्घोष श्रीमद विट्ठलनाथजी ना आंगण मां थवा लाग्यो ॥२१॥ श्रीमद् विट्ठलनाथजी ना आंगनमा मां सर्वे प्राणी मात्र ना मनने अनंददायक आंबा ना पल्लव ने ध्वजा पताका थी युक्त तोरण विगेरे थी अत्यन्त विस्तार वालो लग्न मंडप शोभवा लाग्यो ॥२२॥ ते विवाह महोत्सवना सघला निजजनो भेगा थईने आव्या तेओ श्रीमद् वल्लभनुं श्री अंग पीठीना उबटना थी सुन्दर शोभायुक्त थएलु जोईने आनंद पामवा लाग्या ॥२३॥ आ विवाह महोत्सव माटे श्रीमद विट्ठलनाथजी ए पुत्रना विवाह योग्य पोताना माणसो पासे आनंद थी सामग्री तैयार कराववा लाग्या ॥२४॥ विवाह ना चार दिवस पहेला वेणा भट्टजी ए स्त्रीओ द्वारा नाना प्रकार ना पकवाननी सामग्री वरराजा ने त्यांहां मोकली ॥२५॥ त्यांहां श्री विट्ठलनाथजी ना द्वारे बन्ने सम्बन्धी बहेवाईओ भेगा थया अने पहेलानी रीति प्रमाणे ते बन्ने अगिआर अगिआर सोपारीओ नो विनिमय अंजुली मां आपेल करवा लाग्या ॥२६॥ वेणा भट्टजीने त्यां श्री विट्ठलनाथजी ने पदमावतीजी ना खोला मां अने यथायोग्य बीजा सगाओ ना खोला मां पार्वती जी ने पधराव्या ॥२७॥ ते आनंद पामेली स्त्रीजनोअे कन्या ना हस्त मां नाना प्रकार नी वस्तुओ आपी अने लग्न निर्धार वचन आपीने ते स्त्रीजनो पोत पोताने घरे विदाय थया ॥२८॥ सर्वजनने आनंददायक विवाह नो निश्चय थयो ते समय वेणाभट्ट ने श्री विट्ठलनाथजी स्वकुटुम्ब सहित आनंद पाम्या ॥२९॥ श्री पद्मावतीजी सहित श्री विट्ठलनाथजी ए स्वजनों नी पासे नाना प्रकार नी पकवान सामग्री करावी ॥३०॥ विवाहना पहेले दिवसे अत्यन्त प्रिय एवी वेद विधि थी नांदी श्राद्धादि स्वकुलदेव पूजा विगेरे करी पोताना ज्ञाति जनोंनु भोजन दान विगेरे वेणा भट्टजी ए अने श्री विट्ठलनाथजी ए कर्यु ॥३१॥ माता श्री पद्मावती

जी ने हर्ष ना दाता अने बीजा यमुना कमला विगेरे वेहेनो ने सगां वहाला ने ते विवाह महोत्सवना दिवसे श्री विट्ठलनाथजी आनंद ना दाता थया ॥३२॥ दिवस पूर्ण थवानी चार घड़ी पहेला सगा बहाला भक्तजनों सहित श्री विट्ठलनाथजी पोताना पुत्र श्री गोकुलेश ने उघलावी वेणा भट्टजी ना धामे चाल्या ॥३३॥ मनना जेवा वेग वाला नीला घोड़ा ऊपर श्री गोकुलनाथजी विराजेला छे अनेक व्रजांगनाओ थी विंटाएला छे त्यां ते स्त्रीओ ना मांगल्य गीतो ना नाद थी अने अनेक प्रकार ना वाजित्र ना नादों थी विविध प्रकार ना उत्साह पूर्वक श्री गोकुलेश जी घोड़ा ऊपर विराजी पधारी रह्या छे ॥३४॥ मार्ग मां ते लक्ष्मीपति श्री गोकुलेशजी आगल बंदीजनो स्तुती करे छे अने निपुण गंधर्वो गान कर छे अने नृतिकाओ नृत्य करे छे ॥३५॥ आम सांजथी वरघोड़ो काढ़ी प्रातःकाल मां श्री विट्ठलनाथजी स्वकुटुम्ब सहित आनंद पाम्या थका श्री वल्लभवर श्री गोकुलेशजी सगा वहाला अने जानैया भक्त भक्तजनोथी विटाएला वेणाभट्टजी ना द्वारे आवी पहोंच्या ॥३६॥ कामदेव ने मोह पमाडे तेवी बे सुन्दरीजनने बे मंगलकलश मां जल भरी ऊपर मूकी मस्तके धरीने तेमना पधारतां तेमनी सन्मुख मोकल्या ॥३७॥ आनंद मां व्याकुल थयेला सगा संबंधीओ भाईओ अने काका विगेरे सहित श्री विट्ठलनाथजी ए मंडप ना द्वारे आगल जईने श्री वल्लभ के जेमे श्रवणे करी सज्जनो नी हार हर्ष जलना समुद्र विना बीजू कोई पण जाणी शके नहीं एवा आनंद समुद्र मां मग्न थया ॥३८॥

इति श्री गोकुल वासी महावदास भाई विरंचित श्री सज्जन मंडन ग्रंथे विवाहवर्णननो आठमो अध्याय सम्पूर्ण ॥८॥

॥ श्री गोकुलेशो जयति ॥

अध्याय -- ९

वैष्णवोत्तम कहेवा लाग्या, ते रात्रिए पोताना सुहृद जनो ने माटे वेणाभट्टजी ए मृतिकाना पात्र नी अंदर जे जे उत्तम वस्तुओं कल्पी पुरोहिते, ते मोकली तेमना रहेठाण माटे, श्रेष्ठ सगवड करी अने पछी पुरोहिते ते बन्ने वर वधुने सुन्दर

आसन चौकी पीढ़ा, जाजम ऊपर वेसाडया ॥१॥ पछी ते वर वधूनु हित थाय तेवा मन वाला ब्राह्मणो अनेक मंत्रोथी विवाह होम करवा लाग्या, अने ते बखते चंचल नेत्रकमल वाला ने हास्ययुक्त मुख वाला ते बन्ने वर-वधू ना स्त्रीओ अने पुरुषो दर्शन करवा लाग्या ॥२॥ पछी ते वरवधू वल्लभ राजा श्री पार्वतीजी ना बन्ने हस्त पोताना बन्ने श्री हस्त मां धारण करीने लाजा होम करवा लाग्या ॥३॥ श्रीमद् वल्लभ पोतानी अंजुली मां ते वधू श्री पार्वतीजी नी अंजुली मुकीने तेमा सुन्दर नागर वेल नुं पान धरी ने ते वर श्रेष्ठ शोभवा लाग्या त्यां तेमना सालाए लाज (डांगर पुष्प) चार बखत वर-वधू ना हस्तो मां पधराव्या ने तेमने होम कर्यो अने वल्लभवर अने पार्वती बहुजी बन्ने मंगल फेरा करी अग्नि परिक्रमा करी ॥४॥ मेरू पर्वत नी समीप निर्मल रात्रि ने दिवसे परिभ्रमण करे तेम आ युगल स्वरूप मां श्री पार्वती बहुजी आगल ने वल्लभवर पाछल रही मंगल फेरा मां शोभी रह्या छे ॥५॥ आ प्रमाणे त्यांहां बन्ने वरवधु ने चार मंगल फेरा थया पछी ते बन्ने नो जेम जेम राग थयो तेम तेम त्यांना मनुष्यो जय जय कारना शब्द वाला थया ॥६॥ ते बन्ने जुगल स्वरूप ने आनंद युक्त थइ युवतीजनो आशीर्वचनो आपे छे ॥७॥ चौकी ऊपर थी बन्ने जण उठीने वेदी आगल नीचे ऊभा रह्या अने परस्पर हलदी खेल मां हलदी लेपन करवा लाग्या ॥८॥ वर राजा श्री गोकुलेशजी कन्या ना कलेवर मां हरिद्रा लेपन करे छे ॥९॥ एकवार आरोहण करावी ने श्री वल्लभवर आम तेम फरे छे अने पार्वती बहुजी पण तेवी क्रीड़ा करे छे पछी ते पार्वती बहूजी नी साथे आ वर राजा श्री वल्लभ वेदी आसन ऊपर आवी ने ऊभा रहे छे ॥१०॥ सात्विक भाव मां आश्रय वाला वर राजा श्री वल्लभवर वधु श्री पार्वती बहुजी नी कंचुकी ना बंधन ने बे हस्त थी छोड्वाने बारंबार यत्न करी बंधने मुक्त करे छे ॥११॥ पछी बंन्रे जण परस्पर पोताना मस्तक ने चरण मां अर्पे छे अने अनंग अत्यन्त अन्तर मां रहेलो छे एवा लज्जा थी भरपूर वेणा भट्टनी पुत्री श्री पार्वती जी श्रीमद वल्लभवर साथे क्रीड़ा पूर्ण थया वाद शोभवा लाग्या ॥१२-१३॥ हलदी नुं चूर्ण कपूर कस्तूरी ना जल ना रस थी रंगायेला ते युगल स्वरूप ने जोईने सुन्दरीओ ना जूथो परस्पर हास्य करवा

लाग्या ॥१४॥ त्यारे ते रंगना रस थी सघलो मंडप आभूषित थयो ॥१५॥ हलदीना खेल समये श्री पार्वती बहुजी अने श्री विट्ठल कुमार श्री गोकुलनाथजी एम चार दिवस आनंद थी खेल्या, ते समये ते स्त्रीजनों पण हास्य करीने खेले छे ॥१६॥ चार दिन पर्यन्त प्रेम थी पूर्ण वर वधू एक पात्र मां पोत पोताना श्री हस्त थी भोजन करे छे ॥१७॥ श्री वल्लभ वरे चार दिवस सुधी होम कर्यो एवी रीते विवाह समय नुं कहेलु अनेक कार्य वर राजाए कर्यु ॥१८॥ चतुर्थी होम विवाह होमा पछी थायछे अने ते पछी हाथी खेल करे छे तेमां चोथे दिवसे जमणी ने डबी, बाजुए ते वेदी आगल मीठानो ने चोखानो, एक एक हाथी बनाववा मां आवे छे ॥१९॥ वर राजा श्री वल्लभ डबी बाजु ना मीठाना हाथी भणी रह्या अमे बीजा चोखाना हाथी बाजु वधू श्री पार्वती बहूजी लज्जा थी नमेला मुखार्विन्द वाला रह्या ॥२०॥ पोताना प्रिय वर श्री गोकुलनाथजी ने कह्यु, हे म्हारा दास ! आ हाथी ने तमे जलदी मने आपो अने श्री गोकुलनाथजी ए तेमने कह्यु दासी ए हाथी मने आप एम बन्ने जणे परस्पर ते प्रमाणे सुन्दर वचन कह्या ते सांभली वरने वधुए पहेला ते हाथी अर्पण कर्यो अने पछी वरजी ए अर्पण कर्यो एम परस्पर बन्ने जणे ते हाथी नो विनियोग कर्यो ॥२१॥ वैष्णवोत्तम कहेवा लाग्या पछी ते बन्ने वर वधु ए प्रमाणे बन्ने हाथीओ नो विनियोग करीने छुटा छुटा ऊभा रह्या पछी फरीथी श्री वल्लभवर बहुजी अने जुवती गण थी विंटयेला बहुजी ने कहेवा लाग्या श्री वल्लभ कहे छे हे मम दासी ! आ हाथी ने तमो शीघ्र अर्पण करो तेमनु ते सुवचन सांभली ने वर राजा नी पेठे ते हाथी ने अर्पण कर्यो ॥२२-२३॥ वैष्णवोत्तम कहेवा लाग्या आवी रीते हाथी खेल करीने ते युगल दंपति ऊभा रह्या छे अने आसन ऊपर विराजी कुल मां कह्या प्रमाणे चार वखत शिष्टाचार कर्या ॥२४॥ हवे ते दिवसे ज्यां सौभाग्य वर नायक श्री वल्लभ अने श्री पार्वती बहुजी विराजे छे त्यांहां कोइक रजोदोषथी मुक्त थयेली सौभाग्यवती आवीने ऊभी रही ॥२५॥ हलदीना जलथी पूर्ण एवा मृत्तिका ना पात्र ने डबा हाथे थी जमणा हाथ मां पल्लवे लइने ते सौभाग्यवती त्यांहां ऊभी रही ॥२६॥ तो सौभाग्यवती ए ने वरवधूनी पाछल ऊभी रहीने कुलरीत ने जाणवा मां कुशल

हती तेथी ब्राह्मणोए कहेला वेद मंत्रो थी, बन्ने युगल स्वरूप ऊपर अभिषेक कर्यो ॥२७॥ ए प्रमाणे नागवेली खेल विगेरे त्यां ते ते कार्य मां निपुण स्त्रीजनों ए सुख देनारी रसरूपणी कुल नी रीते करी ॥२८॥ कामदेव थी पूर्ण एवा नाना प्रकार ना माननी सुन्दरीओ ना जूथो ए वरराजा ना देखता सुन्दर मंगल कारक गीत कर्यु ॥२९॥ ते मानवी स्त्रीओ विस्मय पामीने वधु श्री पार्वती बहुजी सहित विराजता श्री वल्लभवर ने प्रेम थी बारंबार आशीषो आपवा लागी ॥३०॥ एवी रीते सर्व नामना जाणकार, लक्ष्मीजी ना पति श्री वल्लभवर ने लग्न महोत्सव वेणा भट्टजी नी पुत्री श्री पार्वती बहुजी नी साथे आनंदपूर्वक थयो ॥३१॥ पछी वेणा भट्टजी नी आज्ञा थता बहेनो भ्राताओ काका ने सगा संबंधी भक्तजनो अने सर्वे जानैया सहित श्री वल्लभवर वधु श्री पार्वती बहुजी सहित निज घरे पधार्या ॥३२॥ आ विवाह उत्सव थया तेथी महा बड़भागिनी श्री पद्मावतीजी माता देह धर्या ना कृतार्थता मानी सर्वे ने आनंद आपनार आनंदरूप समुद्र मां मग्न थया ॥३३॥ तदुपरांत कृष्णादासी, दामोदरदासी, गोरीदासी चाचा हरिवंशजी अने सघलो व्रजवासी नो साथ पण आनंद मग्न थयो ॥३४॥ हवे वृद्धजनो ए कहेला कुल ने अनुसार व्यवाहारिक दक्ष स्त्रीजनो ए जे जे योग्य हती, ते ते विधि पुरोहित द्वारा करावी ॥३५॥ ते ते समय नृत्य करनारीओ ए नृत्य कर्यु अने गंधर्वो ए बंदीजनो ए तेमना यश नुं गान कर्यु ॥३६॥ श्री विट्ठलनाथ श्री गुसांईजी ना आंगण मां रंग नो समुद्र अत्यन्त वृद्ध पाम्यो, अने यक्षो किन्नरो, गंधर्वो ए ऊंचा स्वर थी गान कर्यु, तेमां झाझ ताल पखावज विगेरे बाद्यनो घोष, थयो ॥३७॥ पोताना निधिरूप पुत्रनो, ए प्रमाणे विवाह महोत्सव पूर्ण थयो, त्यारे ते पुत्र श्री वल्लभ श्री अंग ने जोईने, मनमांहा आश्चर्य पणाने पाम्या ॥३८॥ करोड़ों कामदेव समान लावण्य वाला रोम रोम मां अत्यन्त सुन्दर, सर्व ना इष्ट, एवा ते पुत्र श्री गोकुलनाथजी ने जोईने पिता श्री विट्ठलनाथजी ए परम आनंद प्राप्त कर्यो ॥३९॥ नवीन युवावस्था ना उद्देक थी अलौकिक सुन्दर शोभा युक्त श्रीअंग वाला ते पुत्र श्री गोकुलनाथजी ने जोईने पिता श्री विट्ठलनाथजी मोह पामीने चित्रवत थई गया ॥ पूर्ण अंशरूप पूर्ण स्वरूप, पूर्ण काम ने मनने हरण करनारा,

ते पुत्र श्री वल्लभ ने जोईने श्री विट्ठलनाथ गुसांईजी ए कह्यु के हुं धन्यभाग्य वालो छुं, एम मानवा लाग्या ॥४१॥ कोई बे सखीओ ए पूर्ण भाव थी स्वशक्ति अनुसार चरण ना तलथी आरंभी मुकट पर्यन्त श्री वल्लभवर नी प्रिय शोभा नु वर्णन करी छे ॥४२॥

इति श्री गोकुल वासी महावदास भाई विरंचित श्री सज्जन मंडन ग्रंथे नवमो अध्याय सम्पूर्ण ॥९॥

॥ श्री गोकुलेशो जयति ॥

अध्याय -- १०

एक सुन्दरी सखी कहेवा लागी के हे सखी ! आजे श्री विट्ठलनाथजी ना सुपुत्र श्री वल्लभ नी शोभानो पार वाणी पण पामी शकती नथी ते श्री विट्ठल कुमार श्री गोकुलनाथजी ना स्वरूप नुं वर्णन कर ॥१॥ श्रीमद् वल्लभ ना जमणा चरणारविन्द ना तलियामां कमल, वज्र, गदा, पताका, तोरण, सुन्दरवेली अने धनुष ए रेखाओ ना चिन्हो भक्त ना सुख माटेज धारण करे छे ॥२॥ सदा प्रिय एवा श्री वल्लभ ना डावा चरणारविन्द ना तलीया मा ध्वजा, अंकुश, मत्स्य, सुदर्शन चक्र, अष्टदल कमल,अमृत कलश अने जवना चिन्हो ने धारण करे छे ॥३॥ ते श्री वल्लभ ना चरणो ने श्री हस्तो मां नाना प्रकारनी जे सुन्दर रेखाओ शोभी रही छे ते रेखाओ ब्रह्मा विगेरे थी तेमज तेमना थी बीजाओ थी केमे करी जाणी शकाय नहीं तेवी छे ॥४॥ जमणा चरणारविन्द ना तलीए जे कमल नुं चिन्ह बिराजे छे ते शुं जाणे, सुन्दरी ना कठोर कुचनु चिन्ह होय ने शुं ? तेहवु शोभे छे ॥५॥ पोताना निज भक्तो ना संताप ने हरनार एवा ते चरणारविन्द थी कमल नी शोभा ने पण उपमर्दन करी नाखी छे के शुं ॥६॥ करुणा ना भंडार ईश्वर एवा ते श्री वल्लभ ना चरणारविन्द ना तल मां कमल नी पासे वज्र रेखा धारण करे छै ते बज्र रेखा पोताना भक्तो ना अपराध रूपी पर्वत नी पांखो ने छेदवाने सामर्थ वाली छे ॥७॥ जमणा चरण कमल ना तलीए गदानुं चिन्ह, भक्त ना मार्ग

तिरोधान करनारा भक्तो ना पाप रूप पर्वतो ने छेदवा माटे धारण करे छे ॥८॥ पताका अने तोरण नुं चिन्ह ते हमारू मंगल योग छे एहवु ए चिन्ह धारण करीने हुं मांहां मंगल नो दाता छूं एम स्वजनो ने सूचववा ने माटे धारण करे छे ॥९॥ आ श्री गोकुलनाथजी त्याज ते चिन्हो नी साथे इन्द्र धनुष नुं चिन्ह धारण करे छे ते देवोना ईन्द्र ना मद ने हुं हरण करनारा छूं तेनुं ते इन्द्र धनुष नां चिन्ह ना बाना थी पोताना भक्तों ने दर्शावे छे ॥१०॥ त्यांहां चरण तल मां नागवल्ली चिन्ह छे, ते नागवल्ली पत्र (तांबुल) राग सहित कुशल आरोगे छे तेमो स्नेहनु मूल कारण छे ते माटे ते नागवल्ली ना चिन्ह थी ते प्रभु पोताना जनो ने स्नेह नु मूल कारण हूं छु एम जणावे छे ॥११॥ आ श्री गोकुलेश कालकूट समान छे छतां अमृत द्रव वाली होवा थी अंगीकार करे छे पोताना वाम चरण तल मां ध्वजा नुं उत्तम चिन्ह धारण करे छे ॥१२॥ वायु जे दिशा मां थाय छे ते दिशा मां ध्वजा उड़े छे पोताना भक्तो ने ए प्रमाणे सूचवे छे, तमे जे दिशा मां प्रभु होय ते दिशा मां तेमने भजो ॥१३॥ ए ध्वजा चिन्ह पासे अंकुश नुं चिन्ह छे ते स्वभक्त ना मनरूप उन्मत्त हाथी बीजे ठेकाणे जाय छे तेनाथी तेने वारे छे ॥१४॥ जे भक्तजनो चरणारविन्द तलमां वास करवाने इच्छे छे तेमने अंकुश थी आकर्षीने श्री वल्लभ चरणारविन्द मां स्थापन करे छे ॥१५॥ अहीं वाम चरण मां अष्टदल कमल ना बाना थी संबंधी अभय पामी ने महान अष्ट सिद्धियो चरणारविन्द मां हमेशा स्थिर थईने रहेली छे ॥१६॥ वाम चरण मां कीर्ति रूप जवनु चिन्ह छे ते धर्म नी वृद्धि माटे छे अने आ श्री वल्लभ ना बन्ने चरण तल मां भक्त ना रक्षणार्थे सुदर्शन चक्र चिन्ह बिराजे छे ॥१७॥ अमृत कलश तपस्वीना बाने शरणे आवेलो छे आवी रीते चरणारविन्द नुं तल कुंमकुम ना जेवु अरुण ने रस ना उद्रक वालु छे बन्ने चरण तलो सुन्दरी ना कुचालिंगन ना अनुराग नु अनुलेपन होय ने शु ? तेवा बन्ने चरण तलो छे ॥१८॥ कामदेव शरणे आव्या के तेना पाछल रती शरणे आवी के शु अथवा राग वाला भक्तना चित्तने अनुरक्त करवा राग ने धारण कर्यो छे के शु ? ॥१९॥ भक्त ना मननी विचित्र जाल ने चारे वाजू थी शीतलता आपनार सुन्दर चरण तल छे के जे चरणपल्लव मां

कमलो छे ते विदुम ने पण तुच्छकार करीने शोभी रह्या छे ॥२०॥ भक्तो ना चित्त रूप उन्मत्त हाथीओ ने बांधवाना आधार रूप, श्री वल्लभ चरण नी आंगुलिओ धारण करे छे ते अंगुलिओ भक्त ने सुख आपनारी छे के भक्ति ना अंकुरोनी पंक्तीओ छे ॥२१॥ आ अंगुलिओ भक्तिरसनी धाराओ छे के शुं ? अने सुन्दर नखनी पंगती भक्तजनो नी आरत ने हरण करनारी शोभी रही छे ॥२२॥ करोडों चन्द्र समान प्रकाश वाला नखो तो म्हाराथी केम करीने वर्णवी शकाय भक्तो ने रसपान माटे पात्रो ना समूह होयते सुं ? तेहवा शोभी रह्या छे सरोवर माँ थी उत्पन्न थयेली नाल रूपी सुखदायक द्रष्ट पुष्ट सुन्दर गोल जंघा भक्तोना तापने निवारण करी ने शोभी रह्या छे ॥२४॥ ए श्री गोकुलेशजी ना चरणारविन्द भक्तों ना मस्तको ने शोभा वनार पोतेज छत्ररूप थई श्रमने दूर करवाने विराजे छे. के जे जंघा जगत नी शोभा नो तुच्छकार करे छे तेहवी शोभी रही छे ॥२५॥ स्वर्ण थी अधिक अत्यन्त सुख आपनारी सुन्दर ऋणी शीतल विशाल शोभाग्यशील सघन बन्ने जंघाओ शोभी रही छे ॥२६॥ रण संग्राम नी जीत माँ जलना हाथी ना पुष्प रूप. मानुनी ना हस्त कमल ना पुष्प नी कलीरूप अंबीए बन्ने श्री वल्लभरूप अच्युत नी जंघाओ मानुनीओ समूहोना मनो ने मोह पमाडनारी शोभे छे ॥२७॥ कामदेव नी बे जंघाओ जाणे ऋणी ना होय तेवी तेवी ते बन्ने हिंदोला ना बे स्थंभो होयतेवी देखाय छे अने काम नरेश नो मनोहर रसनो भंडार जाणे होय के शुं ? तेम भासे छे ॥२८॥ हे सखी ! सर्वना मनने हरनार विशाल नितंब स्थल आपणा मानुनीओ ने मोहनी जाल रूप छे लोखंड ना मुख वाला पांच बाण वाला कामदेव रूप समुद्र नो जाणे किनारो छे के शुं ? ते शोभे छे हे सखी ! ते वाणी ना पति आप श्री नुं मध्य स्थल श्री अंगनी सुन्दर शोभा आपनार नान्हा सिंह जेवु कार्य करनार सुन्दर सुवर्णनी कटि किंकणी ना झमकाथी शोभतु सुन्दर शोभी रह्यु छे ॥३०॥ त्यांहां गंभीर भ्रमर समान नाभी राजे छै के जेमांथी वेदादिनुं प्रागट्य थवानी पुष्कल कली समान अने जे नाभी कमल ना आश्रय रूप छे ॥३१॥ आ नाभी नथी एम माननाराने सिंह नी इच्छेली गुफा छै कि वा कामरूप समुद्र नी भ्रमरी छे ॥३२॥ किं वा कामदेव नो जाल छे ॥३३॥ उदर रूपी नदमांथी

(धरामांथी) प्रगट थयेलु अलौकिक कमल छे के शुं ? तेहवु शोभे छे ॥३४॥ आ नाभी ते मृग्या खेलवा मां आसक्तो नो काम पास छे के शु ? के स्त्री पुरुष रूप मृग ना टोला ने पकड्वा मोहनुं स्थान छे के शुं ? तेवु भासे छे ॥३५॥ कामदेव ने अंदर अने बहार रति करवाने माटे गृहद्वार छे, के शुं के दास जनो ने रसपान करवा माटे प्रणालिकाओ स्थापन करी छे के शुं ? तेम भासे छे ॥३६॥ मानुनीओ ना मन समूह नो, विजय करवा अही नालिकाने स्थापन करी छे के शुं के जे नलिकाओ नी अंदर आ सुन्दर गोल नाभि काम नरेशे तो नथी राखी मुकी ॥३७॥ हे सखी हुं पामर जीव आपना उदरनी शोभा ने केम वर्णन करवा समर्थ थावुं ? कोई वाचस्पति इन्द्र ब्रह्मा के शेष नारायण वाणी ते वर्णन करवा समर्थ नथी ॥३८॥ त्यारे उदर शुं रसथी पूर्ण नथी ? यथार्थ रसपूर्ण छे ते जाणे सुन्दर सरोवर छे के शुं ? के काम नरेश नुं क्रीड़ा करवानुं के पोतानुं आसन छे के शुं; के ए हमेशां सरे छे खसे छै श्वासो श्वास थी हाले थे ॥३९॥ उदर ऊपरनी त्रिवलिये रसथी आवेश पामेला कामरूप सागर ना तरंगो न होय ने शु ? अने गुण लक्षण ने सुन्दर रूप नी जाणे आ सीमा शोभती होय के शुं? तेम शोभे छे ॥४०॥ हे सखी ते वाणी ना पति श्री वल्लभ नी त्रिवली नथी ? परन्तु देवोए हृदय दुर्ग मां जावा माटे कामदेव ना पगथीया रचेला छे ॥४१॥ हे सखी मने शैय्या, भोजन, अने श्रृंगार, ए त्रण वहाला छे तेनी समस्या आ त्रण वलीओ पोताना जनने आपे छे पण खरेखर ए त्रिवली नथी ॥४२॥ ते श्री वल्लभ ना सुन्दर उदर ना डाबा भाग मां एक चक्ररूप श्याम चिन्ह छे तेनु कारण हु तवे कहुं छु ॥४३॥ ते स्वरूप ,नित चिन्ह रसात्मक श्री वल्लभे, देहनी मध्यना उदरना मध्य भाग मां रस छे तेम सूचवे छे ॥४४॥ आ श्री वल्लभ ने त्रण मोटा भाइओ छे अने बीजा नाना भाइओ त्रण छे तेमा पोते स्वजनो ने सुखदान देवा माटे मध्यमा प्रगट थयेला छे ॥४५॥ जेम गंगा, यमुना ने सरस्वति ना प्रवाहो मां बुध पुरुषो ए यमुनाजी ने रसरूप जाण्या छे तेम प्रवाही, पुष्टि, मर्यादा ए त्रणेमां, पुष्टि जेम मध्य मां छे तेम बधा बालको मां श्री वल्लभने पण रसात्मक अने पुष्टरूप कहेला छे जेम शेरडी ना दंड्मां मध्य भाग मां रसवालो होय छे

तेम झह्या पुरुषो ए जाण्यु छे तेमबधा श्री गुसांईजी ना पुत्र मां मध्य भाग श्री रस सहित रसात्मक श्री वल्लभ विराजे छे ॥४६-४७॥ अच्युत श्री वल्लभे उदर अने मनमां चन्द्रमानु तेज हरी लीधु छे के शुं ? जेथी चन्द्र तेजनी प्राप्ति माटे तपश्चर्या करे छे, के जेथी माहारा मांथी श्याम चिन्ह दूर थाय, तेम श्री वल्लभ चंद्ररूप होई, उदरना नील चिन्ह बानाथी, संध्या वंदनादि "तपश्चर्या" करी श्याम चिन्ह ने दूर करवा इच्छिता होय ने शुं ? तेम चंद्र समान शीतलता दायक शोभे छे, करोड़ों सूर्य समान देह दीप्यमान, ने करोड़ों चंद्र समान नेत्र वाला जगत ने मोह पमाड़नार, शुं आ देहरूप श्री वल्लभ ने जोईने ब्रह्माए कोइनी नजर, कुदृष्टि न लागे माटे ते निवारवाने श्याम बिन्दु उदर ऊपर कर्यु छे के शुं ? तेम ते श्याम बिन्दु शोभे छे ॥४८॥ श्री स्वामिनीजी पार्वती बहुजी ए अर्पण करेला रसथी पुष्ट देहने खरेखर आ राज मुद्रा छे राज चिन्ह करेलु छे ते श्री वल्लभ राज मुद्रा विना मने भजनार नथी, ने ते चिन्ह मारी आज्ञा विना वल्लभ ने भजनार नथी शुं अर्थात श्रीरूप ते चिन्ह वल्लभ ने निरन्तर भजे छे ॥४९॥ वाम भाग मां रहेला चिन्ह थी वामांगीना वर कहेवाय छे के जेथी व्रज भूमीमा निजेच्छा थी स्वकीया रास विगेरे ना सुख दान करवाने योग्यता प्राप्त थाय माटे ते नील चिन्ह अंगीकार करेलु ॥५०॥

इति श्री गोकुलावासी माहावदास विरंचित श्री सज्जन मंडन ग्रंथे दसवां अध्याय सम्पूर्ण ॥१०॥

***

॥ श्री गोकुलेशो जयति ॥

अध्याय -- 99

एक सुन्दरी सखी कहेवा लागी हे निष्पाप सखी ! हवे आगलनी शोभा तने कहुं छुं, जे के ब्रह्मा, इन्द्रादि ने अगम्य छे, ते म्हारी बुद्धि अनुसार कहुं छु ॥१॥ ते श्री वल्लभ नुं उरस्थल सर्व जगतनी लक्ष्मीयुक्त विराजे छे ते कामनरेशनुं अत्यन्त ऊंचु आसन होय के शुं ? तेम भासे छे ॥२॥ निज भक्तों ना मनो ने

श्री वल्लभे अही वक्षस्थल मां धारण करी राख्या छे के शुं ? लीलामात्र थी भक्तना चित्त नुं हरण कर्यु छे, तेथी ऊंचु उर स्थल बिराजे छे ॥३॥ आ श्री वल्लभ ने सरल आ जानु (आजान बाहु) पर्यन्त श्रेष्ठ बे बाहु बिराजे छे ते निज भक्तों ने हरण करे छे अने खल पुरुषोने भय पमाडनारा छे ॥४॥ एमने तो ते बे भुजाओ नथी परन्तु मणिधर सर्पो समान देखाय छे अमृत ने विषना भंडार रूप छे जेम सर्प मां विष होय छे छता मुखमां अमृत पण होयछे तेवी आ बे भुजाओ छे तेनु कारण सांभल ॥५॥ जेवी रीते माणस ने दर्शन थाय ने व्यथा पामे अने फरी थी दर्शन मात्र थी, त्यां तरतज ते जीवे छे ॥६॥ आ श्री गोकुलेशजी बन्ने सर्प समान भुजाओ स्पर्श थतांज ते जन व्यथा पामे छे ने पछी स्पर्शमात्र थी जीवे छे ॥७॥ सर्पना मुख मां विष छे ने मस्तक मां अमृत छे अने वियोग मां विष छे फरी संयोग थी ते जन सर्वे प्रकार नुं सुख मेलवे छे ॥९॥ कमल ना अंतर विभाग ने तुच्छकारे तेवा कर कमल ना तलीया आशुत वर्णना छे श्री वल्लभ ना श्रेष्ठ स्नेह थी जेमना करतल व्रज भक्तोने मोह पमाडी ने शोभी रह्या छे ॥१०॥ ते श्री गोकुलेश नु करतल सुकोमल शीतल ने सुन्दरता वाला श्रेष्ठ स्पर्श ना स्वाद थी इच्छा अनुसार आर्तिने हरण करनारु ए सुन्दर करतल विराजे छे शोभी रहेलु छे ॥११॥ श्री वल्लभ ना जमणा हाथना करतल मां त्रण स्वस्तिक कमल जव चक्र एक लाकड़ी जेवु चिन्ह ने गायनी खुरी जेवा चार चिन्हो शोभे छे ॥१२॥ ते श्री वल्लभ प्रभुना डाबा करतल मां पांच चिन्हो बाण त्रिकोण षटकोण बे वेलीने चतुष्कोण धारण करे छे ॥१३॥ जमणा करतल मां त्रण स्वस्तिक शोभे छे तेथी श्री वल्लभ माहामंगल रूप ने भक्तजनोने महामंगल रूपना दाता छे श्रीमद् गोकुल श्री यमुनाजी अने वृन्दावन आ श्री गोकुलेश मंगलात्मक छे, तेवी रीते त्रणे काल मां तेवा मंगलदायक छे तेथी श्री हस्तकमल मां त्रण स्वस्तिक शोभे छे ॥१४॥ श्री करकमल तलमां जवनुं चिन्ह छे ते श्री वल्लभ प्रभु गूढ भावथी, भक्तजनों ना इष्टना दाता अने योगमाया ना आश्रय वाला गूढरूपे बिराजे छे एम कथन करे छे ॥१५॥ कुच, मुख, नेत्र, हृदय, नाभीकमल, ए बधा स्व भक्तोना कमलोना रसनो आ श्री वल्लभ भोक्ता छे, स्वभक्तजनो ना ताप हरण करवा

करकमल मां कमल नुं चिन्ह शोभी रह्यु छे ॥१६॥ हमेशा अंग सहित धर्मो ना आ श्री वल्लभ संरक्षण करनार थइ शोभी रह्या छे ॥१७॥ पोतानी व्रजभूमि मां सत्यनु संस्थापन करवा माटे अने असत्य नुं दलन करवा माटे जमणा श्री हस्त मां निर्मल चक्र सुन्दर रीते शोभी रह्यु छे ॥१८॥ सर्वथी श्रेष्ठ पुष्टि पुष्टि स्वरूप श्रेष्ठ धर्म ने माटे धर्मनी लाकड़ी जेवु चिन्ह श्री हस्त मां शोभे छे । ते धर्मने आ श्री गोकुलेशजी भक्तो ने अर्पण करे छे दान करे छे ॥१९॥ मानुनीओ ने मोहादिक वाणो फेंके छे तेथी वाम हस्त कमलना तलमा पांच वाणोनु चिन्ह विराजे छे व्रजना भक्तजनो ना कुच कमलना आ श्री गोकुलेश भ्रमर रूप पूर्ण पणे शोभे छे, तेथी वाम हस्तकमल मां षटकोण नुं चिन्ह परम शोभायुक्त शोभी रहयुं छे ॥२०॥ ऐश्वर्य ना गुणोथी युक्त पोते श्री गोकुलेश छे ए रसना भोक्ता छे तेथी श्री वाम हस्तना षटकोण थी पोताना प्रियजनो ने ते ऐश्वर्यादि ना दान करनारा छे एम सूचना करे छे ॥२१॥ त्रणे कालमां कामदेवना रसथी पूर्ण आप श्री वल्लभ शोभे छे तेथी प्रिय प्रभु ना हस्ततल ना त्रिकोण थी हु कामना धाम रूप छु एम सूचवे छे ॥२२॥ पूर्ण काम रसमां नेत्र रसमां प्रेम रसमां अने वाणीनो रस विगेरे रसोमां हू पूर्ण छूं तेम भक्तो ने वाम हस्तना चतुष्कोण चिन्ह थी कथन करे छे ॥२३॥ श्री वल्लभ ना डाबा हस्त तल मां मानुनीयो ने सुख आपनारी कामवेली अने मोह पमाड्नारी वेली अने कुटिलता विगेरे नी वेली शोभी रहेली छे ॥२४॥ बली तदुपरान्त श्री गोकुलेशजी ना बन्ने हस्त कमलमा ने बन्ने चरण कमलमां नाना प्रकारनी रेखाओ देखाय छे पण तेनु कारण जाणी शकातु नथी ॥२५॥ श्री हस्तकमल नी सुन्दर शाखाओ अंगुलीओ रूपे पूर्ण निर्मल शोभे छे अने ते अंगुलीदल कमल ना पत्रो (पांखडीओ होय) तेना समान शोभे छे ॥२६॥ आ आंगलीओ नथी पण अहीं पण महारासनी उत्तम कथा मां व्रजसुन्दरीओ ना कुच कमल ना सारा पात्रो मां थोड़ा अक्षरो ने लेखन करवा माटे आंतर रक्त रूप साही थी कामने सुन्दर रसना सुन्दर लेखन थी ते त्रिलोकी ना जीतनार श्री वल्लभ नी प्रीति करनारी अंगुलीयो चित्र विचित्र लेखनीयो (कलमो) होय तेम शोभावाली लागी ॥२७॥ आ अंगुलीयो नथी शु ? परन्तु श्रीमद् वल्लभ रूप

काम नरेशना रसयुक्त पांच वाँणो रूप शोभे छे तेथी श्री वल्लभ ना वधु श्री पार्वती बहुजी रतिथी तीव्र मुखवाला थाय छै वली ते अंगुलीयो मां रत्न जड़ित सुन्दर सोनानी विटींओ छे ते अति निर्मल विटींओ मानुनीओना मनने भेदनारी धारण करी छे के जेथी ते विंटीओ प्रणाली रूप छे, (वाणोनी नलिका रूप थइ) कामदेव ना वाणो ना मुखो ने फेंके छे हवे अंगुलिओ ना तीक्ष्ण पणा नखों केम जाणें काम नी कांती नी पंक्तीओ होय के शुं ? ॥२८॥ कि वा अंगुलीयो रूप कामवाणो ना अत्यन्त तीव्र कामदेव धसेला तीक्षण वाणोना समूह ना भालोडीया छे के शु? सुन्दरी सखी कहे छे के अही मारी बुद्धि वाला चित्तमा एक प्रकार थी निर्धार थई सकती नथी ॥२८॥ श्री वल्लभ नी कंधरा (डोक) निर्मल अने कमलनी सारी नाल समान अत्यन्त शोभी रही छे के जे ग्रीवा भक्तों ना तापने हरे छे वली ते ग्रीवा डाबी तरफ नी निर्मल शंख समान सुन्दर बे कपोत थी युक्त होय तेवी सर्वथा सौभाग्य मदना गर्वने सुन्दर रीते दलन करवाने वाणी ना अग्र मार्गनो आश्रय करनारी शोभी रही छै ॥३०॥ भक्तजनो ने प्रिय एक श्रीमद् वल्लभ सुन्दर बेवड़ी माला ने धारण करे छे वृन्दा तुलसी वल्लभ पणा ने विचारी ने सुन्दर रसयुक्त थई, श्रेष्ठ भावनो आश्रय करी ने रहेली छे एम श्री वल्लभ माला ना मिष थी भक्तो मने वहाला छे एवु निजजनो ने कथन करे छे ॥३१॥ श्री वल्लभ कंठमां गुंजाना हार धरे छे ते अनेक युवतीओ नो समूह होय तेम भासे छे त्रिलोकीनी शोभाने धारण करता छे के शु ? सुन्दर स्नेह ना कुंभनी खाण छे के शुं ? अथवा ते गुंजानी माला श्रेष्ठ सुन्दरीओ ना नासिका मां रहेला मोती ने जोवाथी नेत्रना कटाक्ष थी श्याम मुखवाली अने बीजी रीते नीचे रहेला अधरनी कांति थी लाल गुंजा ते (बानाथी) मिस थी धारण करे छे ॥३२॥ ते प्रिय श्री वल्लभ जलना निवास रूप भुजाना पास रूपे उपवित ने धारण करे छे किंवा पांच सारा रंगनी सुन्दर रचना वाली श्रेष्ठ वैजयन्ती माला रूपे किं वा पांचमा वर्ण रूप वैष्णवजनो ने हु अंगीकार करूं छु एम उपवित ना छलथी दरेक ने अही बतावे छे ॥३३॥

इति श्री गोकुलवासी माहावदास विरंचित श्री सज्जन मंडन ग्रंथे ग्यारहवां अध्याय सम्पूर्ण ॥११॥

॥ श्री गोकुलेशो जयति ॥

अध्याय -- १२

एक सुन्दरी सखी कहेवा लागी आ श्री वल्लभना मुखारविन्द नी शोभा हु शुं वर्णवुं ? जे शोभाने भ्रमरानो ईश नरेन्द्र ते पृथ्वी ने पल्ले, लाज विनानी कोई दिवस जाणे खरो ? तेम हु पण ते शोभाने वर्णवी शकुं खरी ? मुखकमल थी नीचा भाग मां सुन्दर चिबुक शोभे छे, सुन्दर जगतनी शोभा युक्त कोमल कमलना विसे तंतुनी माफक शुभ शोभा आपे छे ॥२॥ आ चिंबुक नथी, पण ए एकाती भक्तोना आधार रूप मद नो रसपान करवा ने माटे स्थापित करेली प्रणाली होय के शुं ? तेवी रीते सतत एकांतिक भक्तो नें मधुर रसनुं पान कराववा मां परायण छे ॥३॥ कोमल कांति वालो शीतल अने कुम कुम जेवो लाल अधर चिंबुक ना संयोग थी विद्रुम बिंब कांति जेवो सुन्दर शोभी रह्यो छे ॥४॥ सुन्दर ओष्ट पद्म पल्लवना मिसथी आरक्त रूप सरस्वती वसे छे ते आरक्त रूप कामदेव ना रसनी महत्ता छे के शुं ? ॥५॥ अग्नि ना संघ समान बिजली ने तेनी कांति समान श्री अंगथी निकलती वाणी मानो नाद करती श्वासना त्रण वायुना आश्रय वाली मूल थी शुभ होई, इन्द्र गोप जंतु जेवी सुन्दर कांति वाला मंद हास्य वाली ऊंचा प्रकारना रसनुं दान करनारी वृष्टि थी व्रज भक्त रूप चातक श्रेष्ठ ने संतुष्ट करनारी अने श्रेष्ठ भक्तो ना हृदय मांथी द्रवीभूत थनारी, श्री गोकुलेशजीनी निर्मल श्वेत दंत पंक्ति, शोभी रही छे ॥६॥ चंपाने मृगमद समान नाशिका पुट हमेशा निर्मल शोभे छे ते नासिका तेलनी धाराने, पोपट नी चोंचने सुखपूर्वक तुच्छकार करे छे तेथी तेवी सुन्दर नासिका विराजे छे ॥७॥ ते नासापुट नथी परन्तु कमलना अंतर्दल ने आदर थी हंसे सुन्दर चोचने ते ग्रहण करवा प्रेरेली छे तेवी शोभायुक्त नासिका छे ॥८॥ श्री वल्लभ ना बे गलस्थल श्री फलना अंदरना गर्भ थी प्राप्त करेली स्थिति वाला तेहवा श्वेत रक्त शोभे छे तेवा ते बन्ने गलस्थल, सुन्दर व्रज सुन्दरीओ ना रसना पान पात्र रूप कामदेव ने वधारे छे कमल ना तंतु ना समूह समान, सुकोमल सुन्दर श्री वल्लभ ना गलस्थल जोईने मारू मन केवु ए थाय छे के तेणे हुँ अही जाणी शकती नथी तेवा सेकड़ों

सूर्यनी कांति समान चलकी रही छे ॥९-१०॥ हे सखी ! तु चंचल अने रसपूर्ण श्री वल्लभ ना बे कपोल ने जो के श्री कर्ण मां अंगीकार करेला कुंड्लो नी कांति थी मिश्रित थयेला छे के जेनी उपमां बीजी आपी शकाय तेवी नथी ॥११॥ ते बन्ने कपोल नथी, किन्तु कामनरेश ना ते बन्ने पाशो छे, स्त्री पुरुषो नी पंक्ति पोते ग्रहण करवा माटे तेमनी स्थिती करावेली छे ॥१२॥ हे सखी ! सोनाना जड़ित सुन्दर रत्न युक्त कुंड्लो थी प्रिय लागे तेवा वे कर्ण धारा मां, श्रुति ने स्मृति वे द्वारपाल तरीके आवी रहेला छे ॥१३॥ सुन्दर ताना समुद्र रूप वल्लभेज बन्ने कर्णो मां जाणे भक्तो नी आरति नाश करवा माटे चक्राकार कुंड्लो धारण करेला छे ॥१४॥ हे सखी ! मे आ जाण्युं के ए हालता कुंड्लो छे तेथी काम नरेश रति सतीनी साथे विलास करतो हिंदोला मां जाणे बैठो होय, तेम लागे छे ॥१५॥ हे निष्पाप सखी ! एकाग्र मनथी श्री वल्लभ ना चपल बन्ने नेत्रो ने जो पांच वांण जेनी पासे छै तेवा कामदेव ने पण मोह पमाडे तेवा नाना प्रकारना भावो ए नेत्र मां थाय छे ॥१६॥ वधु श्री पार्वती बहुजीनी नाना प्रकार नी भाव थी प्राप्त थयेली प्रीति थी थयेला संगीतन। लास्यथी नाना प्रकार ना भावने प्राप्त थयेला आ श्री वल्लभ साक्षात कामदेव रूप थयेला छे के शुं ? ॥१७॥ कामथी गुथाएली जालमा पड्लु मत्स्य युगल छे के शुं ? के कामदेवना बाणरूप नेत्रो त्रणे जगत मां जाय छे के शुं ? ॥१८॥ हे सखी ! झड़पथी चालनारा वमलो जेमा छे ते रसनो समुद्रना चंचल तरंगो छे के शुं ? सुन्दरीओ ना मुखेन्दुओ जोईने ते रसनो समुद्र उदय पाम्यो होय के शुं ? तेणे हे सखी ! तू जोअने ते समुद्र ना तरंगो ने सुन्दर मुखार्विंद ने ते मानुनीओ जुओ ॥१९॥ नेत्रोनी मिष थी सूर्य चन्द्रनो उदय थयो छे के शुं ? सुखरूप चन्द्रना अमृतनुं पान करवा माटे बे चकोरे रहेला छे के शुं ? तेवी नेत्रोनी शोभा छे ॥२०॥ कामभूपति जगत ने जीतवा माटे जाय छे के शुं ? तेथी तेनी मार्गनी ध्वजा बे चिन्हो होय तेम ते बन्ने चपल नेत्रो शोभे छे ॥२१॥ नासिका रूप यंत्रथी बे गोलको निकलता होय छे के शुं ? केवा सोनाना पाजरा मां पांख वाला बे पंखीओ ने धारण करी राख्या छे के शुं ? ॥२२॥ नासिका रूपी शुक स्त्री (मेना) बे पक्ष (पांखोना)

सज्ज करे छै के शुं ? मुखरूप समुद्र मां बे भ्रमर आसक्त थइ रहेला छे के शुं ? ॥२३॥ मुखरूप सरोवर मां बे कमल प्रगट थया छे के शुं ? के जे नेत्रना मध्य भाग मां तारा रूप भ्रमरना योग थी प्रीतिकारक बन्ने नेत्र शोभे छे चपल थाय छे ॥२४॥ धीमे धीमे आ नेत्रो निमेष करे छै तेने तू जो तेमा अहीं कामदेव ने पण मथवाने समर्थ नाना प्रकार ना भावो नु उत्थान थाय छे ॥२५॥ कमल ना जेवा मुख वाला ते श्री वल्लभ भक्तोना भावने आकर्षी आकर्षी ने रसथी पूर्ण नेत्र कमल मां ते भावनो संचय करे छे ॥२६॥ आ रसप्रद प्रभु श्री गोकुलेश नेत्रनी समस्या थी भक्तजनो ने बोलावे छे के शुं ? ते बात बीजो कोई जाणतो नथी ॥२७॥ मंद हास्य करीने नेत्रोथी ज्यारे ते प्रभु श्री वल्लभ पोताना निजजनो ने रसदान माटे अवलोकन करे छे ते समय नुं सुख केवी रीते वर्णन थई शके ॥२८॥ सरलताथी आ लोकना सुख, मुखारविन्द ना अवलोकन सुख मां शुं कहेवुं ? तेमना नेत्रथी लाल रेखाओ मुखारविन्द थी निजजनो ने सुखनु सूचन करे छे ॥२९॥ ते बन्ने नेत्रनी पांपणो नो नाना वालनो गुच्छो शोभे छे ते बन्ने जाणे कामदेवना बाणो थी भरेला अक्षय भाथा होय के शुं ? तेम सूचवे छे, नेत्र कमलनी शोभा म्हारा थी केम वर्णन थइ शके ? त्यांज मारू मन मग्न थई जाय छे तेथी मारी बुद्धी काम करी शकती नथी ॥३०॥ ते तेमनी कुटिल चपल ने निर्मल भ्रकुटी जोईने मारा थी ते भ्रकटीनूं कारण टूकी बुद्धि थी जाणी शकातु नथी ॥३१॥ वाकी एवी आ भ्रकुटी नथी परन्तु पार्वती बहुजीनी भोगनी लक्ष्मी छे, ए भ्रकुटी ने जोईने परवश थाय छे तो पछी मने ते अंगस्पर्श थी शु थाय ? ॥३२॥ हे सखी ! ए भ्रकुटी नथी कामदेव छे तेमां बाणोनु आसन छे धनुष छे तेने सज्ज करीने द्रष्टि थी अबला गण ऊपर वाणो ने फेंके छे ॥३३॥ हु नथी जाणती के आ श्री वल्लभ भ्रकुटी रूप धनुष मां कयारे वाणो चढ़ावे छे अने कयारे फेंके छे अने कयारे सुन्दरीओ ना हृदय ने भेदे छे ॥३४॥ एमना ते भ्रकुटी ना बाण थी हराई गयेला चित्त वाली एवी त्यारे हुं शुं कही शकुं? तेमना अत्यन्त मृदुल ईक्षण बंध थी हु हरायेली बुद्धी वाली छुं ॥३६॥

इति श्री गोकुलवासी माहावदास विरंचित श्री सज्जन मंडन ग्रंथे बारहवां अध्याय सम्पूर्ण ॥१२॥

॥ श्री गोकुलेशो जयति ॥

अध्याय -- १३

सुन्दरी सखी कहेवा लागी करोड़ों सूर्यनी कांति वालु, अने दंडाकार सुन्दर केसरना तिलक थी, आ श्री गोकुलेशजी नुं भाल शोभी रह्यु छे ॥१॥ परम्परा तिलकनी बे रेखा थी जे उपदेश छे तेवा तिलकनी मिस थी सेवको ने सूचवे छे के हुं बे प्रकार रूपे छु तेथी श्री गोकुलेश बे रेखा बालु तिलक धारण करे छे ॥२॥ कामना धाम रूप ऊर्ध्वपुंड्र अने मोर पिच्छना कारण संयक्त बृज भक्तो ना अंगनी शोभारूप तिलक छै तेने सुन्दर नेत्र थी हे सखी ! तु जो ॥३॥ सुन्दर ऊर्ध्वपुंड्र तिलकनी बे रेखाओ नी मध्ये, स्वाभाविक शुभ श्याम छिद्र शोभे छे ते जाणे वल सहित कामनरेश आशक्त थयेलो होयने शुं तेवु शोभे छे ॥४॥ ते रसरूप अने रसदाता श्री गोकुलेश गुणरूप रसना आनंद नी आ मर्यादा छे एम रेखा थी भक्तोने सूचवे छे कथन करे छे ॥५॥ ते तिलकनी श्याम रेखा कामदेवनी मोहवेली छे के शुं ? के काममार्ग नी पद्धति छे के शुं ? मेघनी आभा समान आ रेखा, मारा मनने मोह पमाड्ती शोभे छे ॥६॥ आ तिलकनी श्याम रेखारूप बाण भ्रकुटी रूपी धनुष थी इन्द्र वधुने जीतवा माटे तेना मस्तक ऊपर कामदेव रूप थईने नाखे के शुं ? तेम देखाय छे ॥७॥ श्री वल्लभ पोताना उत्तमांगमां मस्तक रूप कलिंद पर्वत ना शिखर थी नीचे उतरता श्री यमुनाजी रूप आ श्याम रेखाने तो धारण नथी करता शुं ? ॥८॥ हे गौरी सखी ! श्याम कांति वाला श्री वल्लभना, मस्तक ना केश शोभे छे ते केश स्वर्गनी उत्तम शोभानो तुच्छकार करी करी ने सरस मेघो न होय तेम शोभा आपी रह्या छे ॥९॥ आ केश नथी पण सर्पो ना कुमारो छे के जेमने अमृत प्रिय होय छे ते नाग कुमारो जाणे मुखारविन्द ना अमृतनुं पान करवा आवेला न होय के शुं ? तेहवा शोभी रह्या छे ॥१०॥ मेरू पर्वत सहित आ मेघनी घटा रहेली छे के शुं ? के कलिंद पर्वत ना शिखर द्वारा, यमुनाजी नी धाराओं पड़ी रही छे के शुं ? तेवी ते केशनी हार शोभे छे ॥११॥ मुखरूप सुवर्ण कलश, जे अमृत थी पूर्ण छे ते कमलनी पांखडीओ थी, विजय नी इच्छा वाली सुन्दरीओ थी सेवाई रह्यो छे के शुं ?

तेहवी शोभा श्रीमुख नी शोभे छे ॥१२॥ सुन्दरी नी सुरत समय ना युद्ध मां, केश ना मिष रूप चामर थी, ते श्री वल्लभ ने विजय वाला मानी ने कामदेव वीजणो नाखे छे के ते शुं मानीने ते जाणी शकातु नथी ॥१३॥ ते श्री वल्लभ ना धोती ने उपरेणो सारा कांति वाला श्वेत शोभी रह्या छे जेम कोई श्रेष्ठ बालक ना मत्स्य चिन्ह थी संयुक्त श्वेत आंखना गोलक होय तेवा छे के जे म्हारा मनने गमी गयेला छे ॥१४॥ धोती उपरेणा ना मिष थी आ श्री वल्लभे बेऊ पक्षमां चारे बाजुना यशने अंगीकार करेलो छे ॥१५॥ ते धोती उपरेणो कामदेव ना चिन्ह थी नथी शुं ? एक कामदेव नुं वाहन छे अने बीजु उपरेणो तेना ध्वजाना शिखर रूप छे सेवक सहित आ कामदेव ने जीतेलो छे आ बन्ने वस्त्रो ना ते ते कार्य थी ते बन्ने वस्त्र मां दासनी स्थिती रहेली छे दास भाव छे, श्री गोकुलेश नी गती थी मदोन्मत्त हाथी ना सुन्दर कुंभ स्थलनी चतुरता ने पूर्ण पणे दूषित करी छे ते श्री वल्लभ नी गती जोईने कामदेव पण मोह पामे छे ? हे प्रिय सखी ! जेवी रीते श्री अंगनी शोभा मोह उपजावनारी छे अने अनेक भावोना समुद्र ना तरंगो ने वधारनारी छे तेवी रीते म्हारी दृष्टि ग्रहण करती नथी अने मारी जीभ ते जोईने कामदेवनी पीड़ाने कहे छे ॥१६॥ हे सखी मर्म भेदनार श्री वल्लभ ना श्री अंग थी तीव्र बाणो ना समुदाय मर्म भेदी नाखे तेवा छे ते वेग थी तपे छे अने निकले छे के जे मारू वक्ष स्थल (छाती) अने मारा गात्र ने भेदे छे, तेने हु शुं कहुं ॥१७॥ काम रस थी उन्मत्त ने आतुर वनिताओ श्री वल्लभ ना नेत्र थी उत्पन्न थयेला वाणो ने केवी रीते सहन करे छे ? हे प्रिय ! कामना भाव थी मारू अखिल मन विह्वल पणाने प्राप्त थायछे ॥१८॥ वैष्णवोत्तम कहेवा लाग्या आ प्रमाणे ते सखी नुं वचन सांभली ने, बीजी तेमनी अति प्रियदासी, श्री वल्लभ ना श्री अंगने जोइने मोह पामी अने आनंद थयो ॥१९॥ ते बीजी सखी जाती गुर्जरी हती ते श्री विट्ठलनाथजी ना चरणारविन्द मां आशक्त हती ते तेमने नमीने स्तुति करीने त्यां उमंगेला प्रेमना अतिशय वाली थईने ऊभी रही ॥२०॥ हवे एमने अत्यन्त प्रिय लक्ष्मी समान जाती थी गुर्जरी, दामोदरदासी श्री वल्लभ नी नित्य प्रति सेवा करे छे ॥२१॥ ते दामोदरदासी जन वल्लभ एवा

श्री वल्लभ ने प्राण थी प्यारा जाणे छे अने ते श्री वल्लभे तेना सर्वे प्रकारे सर्वे मनोरथो पूर्ण कर्या ॥२२॥ आ श्री वल्लभे जे जे सुन्दरीओ नुं चिन्तन कर्यु, तेमने तेमने आदरथी विविध उपायो रचीने तेमने लावी ने दासे अर्पण करी ॥२३॥ मथुरापुरी मां जे श्रेष्ठ स्त्रीओ श्री वल्लभवर ने निरखी ने मोह पामी, अने करोड़ों कामदेव जेवा तेमनो श्रीअंग ने जोईने पोताना देहनी सुधि भूली गई देहनु संधान रहित थया ॥२४॥ श्री विट्ठलनाथ श्री गुसांईजी ए अंगे सर्व अंश थी भरपूर, सर्वना आधार श्री पुरुषोत्तम जगत ना प्रिय श्री वल्लभे आवी रीते अनेक क्रीड़ाओ करी छे ॥२५॥ हवे विश्व ने मोह पमाड्नार एवा श्री वल्लभ एकवीस वर्षना थया अने सदा आनंद जेने प्रिय छे एवा सती श्री पार्वती बहुजी बार वर्षना थया ॥२६॥ श्री विट्ठलनाथ श्री गुसांईजी मथुरा नगरी मां सात वर्ष सूधी निज भक्तोना अनेक मनोरथ पूर्ण करता, पोते विराज्या ॥२७॥ संवत् १६२८ सोलसे अठावीस ना वर्षना शुभ समये जेमा रस उदभव थयो छे तेवु श्रीमद् गोकुल श्री गुसांईजी ए वसाव्यु ॥२८॥ ए श्री यमुनाजी ना किनारे प्रिय श्रीकृष्णचंद्र नुं रमण स्थान एवुं श्रीमद् गोकुल ने जोइ ते श्री वल्लभ प्रभु आनंद प्राप्त करवा लाग्या ॥२९॥

इति श्री गोकुलवासी माहावदास विरंचित श्री सज्जन मंडन ग्रंथे तेरहवां अध्याय सम्पूर्ण ॥१३॥

॥ श्री गोकुलेशो जयति ॥

अध्याय -- १४

वैष्णवोत्तम कहेवा लाग्या, हवे श्रीकृष्ण रूप श्री विट्ठलनाथजी ए फागण मासनी सप्तमी ए पोताना कौटुंबिक जन सहित प्रेम थी श्री गोकुलमां प्रवेश कर्यो ॥१॥ ज्यांहां श्री यमुनाजी नो वास छे, त्यांहां सुख सागर एवा श्रीमद् गोकुल मां कुटुम्ब परिवार सहित तेमने वास कर्यो ॥२॥ श्री गुसांईजी ने साध्वी सुख आपनारा, सुन्दर श्रीअंग वाला लक्ष्मीरूप पद्‌मावती नामना बीजा पत्नि हता ॥३॥ श्री गुसांईजी ने बधा थईने पंदर बालको थया तेमना नामोने शांभलो ॥४॥ श्री

विठ्ठलनाथजी थी श्री रुक्मणीजी ने पांच कन्याओं अने नव पुत्रो प्रगट थया, अने पद्मावतीजी थी एक पुत्र प्रगट थयो ॥५॥ पहेली शोभाजी कन्या श्री रुक्मणीजी थी थया अने बीजो सुन्दर आकृती वालो गोविन्द नामनो बालक थयो त्रीजो बालक गिरधरजी पछी चौथा गोविंदरायजी अने पांचमां सूर्यपुत्री यमुना ते पछी छठा बालक बालकृष्ण सत्य पुरुषो ने सर्वे अर्थना दाता श्री वल्लभवर श्री गोकुलेश सातवां पुत्र थया, अने सुन्दर गुण वाली देवका नामनी आठमी कन्या थई ॥६॥ नवमां रघुनाथ पुत्र थया ने दशमी कमला नामनी कन्या थइ अने अंगीआरमां महाराजा नाना बालक थया (यदुनाथजी) बे पुत्र प्रगट थया, जेओना नामकरण अत्यन्त कारण थी कर्या नथी अने छेल्ली अतृप्त नामनी कन्या थई, एम श्री रुक्मणीजी ने चौदह बालको थया ॥७॥ बधा बंधुओ मां नाना भाई ते श्री वल्लभ ने प्रिय एवा घनश्याम नामना पुत्र पद्मावती जी ने श्री विठ्ठलनाथजी थी थया ॥८॥ श्री विठ्ठलनाथजीना पुत्रो ना सात पुत्रो महा बलवान थया, प्रताप वाला ने जुदा जुदा भेदवाला थया तेमना नाम साभलो ॥९॥ सूर्य समान तेजवाला गिरधरजी, सुन्दर गोविन्दरायजी, अने सकल निगमने जाणनारा त्रीजा बालकृष्णजी थया, अने अखिल भक्तना आत्मारूप व्रजेश्वर अवलाना ईश सुरतना रण संग्रामना ज्ञाता श्री विठ्ठलनाथजी ना चौथा पुत्र श्री गोकुलेशजी प्रगट थया पछी पांचमा सर्ववेत्ता रघुनाथ अने पछी महाराज श्री यदुनाथ जे क्षमाना ईश छे तेवा छठ्ठा पुत्र थया अने सोथी नाना सारा संतोष वाला अने मधुर वचन थी भाषण करी विचारनार, पद्मावतीजी थी घनश्याम जी नामना पुत्र थया ॥१०॥ श्री विठ्ठलनाथजी ना सातो पुत्रों मां आ श्री गोकुलनाथजी कृपा सहित पोते मध्यभाग मां प्रगट थयेला छे ॥११॥ अग्नि स्वरूप श्री वल्लभाचार्यजी ना श्री विठ्ठलनाथजी ने भार, जेमने बधो ए माथे लीधो छे धारण कर्यो छे एवा श्री वल्लभ श्री गोकुलनाथजी व्रजमा शोभवा लाग्या ॥१२॥ क्षमाना भंडार बुद्धिना भंडार, दयाना भंडार, यशना निधिरूप, श्री वल्लभ श्री भक्तजनो ना सुखने पूर्ण करता अत्यन्त शोभवा लाग्या ॥१३॥ सदा आनंदरूप व्रजनागर श्री वल्लभ, श्री गोवर्द्धननाथजी ना आदरथी दर्शन करवा पधारे छे ॥१४॥ श्री गोवर्द्धननाथजी

साथे अनेक प्रकार नी वारतालाप करे छे (करता) ने तेमने सुखदान करता अने पोताना निजभक्तो ने पण ते प्रभु सुखदान करता हता ॥१५॥ एवी रीते व्रजनाथ श्री गोकुलेश श्री गोकुलनां यमुना किनारे, वृन्दावन मां, अने अहर्निश नित्य निरन्तर रमणीय गिरिराजनी पासे रमण करे छे ॥१६॥ अच्युत एवा श्री वल्लभ ना छ भ्राताओ कया कया छे ? हे स्तुत्य सखे ! सांभळवानी इच्छा राखनार एवा हुं छु तेथी मने कहो एम वैष्णवो ए पूछ्यु ॥१७॥ त्यारे वैष्णवोताने कह्यु के भगवान मां ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान अने वैराग्य ए छ गुणो वर्णे पूर्ण पणे वसा छे ॥१८॥ गिरधरजी मां ऐश्वर्य नो गुण छे, गोविन्दजी मां वीर्यनो गुण छे बालकृष्णजी मां यश गुण छे आम श्री गुसांईजी ना आ त्रण बालकोमां आ त्रण भगवद गुणो जननी बाजु छे ॥१९॥ रघुनाथमां श्री गुण, यदुनाथजीमां ज्ञान गुण, अने घनश्यामजीमां वैराग्य गुण, ए त्रण भगवद गुणो डाबी पासाना छे ॥२०॥ ऐश्वर्यादि छ गुणो थी युक्त श्री पुरुषोत्तम पोते व्रज भक्तो ना अर्थनी सिद्धी माटे स्वयं प्रगट थया कामदेवना सारा यशना विशारद जेनु पुण्यकाम श्री अंगे छे तेवा श्री पार्वती बहुजी आ श्री वल्लभवर साथे शोभवा लाग्या ॥२१॥ हवे श्री वल्लभ पच्चीस वर्षना छे तेओ सोल वर्षना पार्वती बहुजी साथे एकांत मां अनेक प्रकार नी क्रीडा छे ॥२२॥ हे अंगे ते बन्ने दंपती कामशास्त्र मां जाणकार छे ने बन्ने रसीक दंपती परस्पर कामकला ना रण संग्राम ने आरंभ करवा लाग्या ॥२३॥ सुन्दर कटाक्षो थी जलदी जनार आक्षेपो थी सुन्दर चाटु वचनो थी अने मोहहासोथी ते बन्ने दंपतीने त्यां कामयुद्ध पूर्णपणे थयुं ॥२४॥ ते पार्वती बहुजी लावण्य औषध थी पुरीने घडयेला सुवर्णना गेहना जेना माणेक जडेला छे तेवा गेहना पहिरेला छे तेथी कामयुद्ध समये मंदहास्य युक्त श्रेष्ठ मित्र श्री गोकुलेशजी ना कामना पूर्ण करता थया तेवा श्री पार्वती बहुजी नासिकाना मोती नी नालथी श्रेष्ठ सुभट श्री वल्लभना उरोज उपर वागीनी ध्वनिपूर्वक गोल सारुं चंचल मुक्ताफल फेंक्यु ॥२५॥ तेनाथी पीडयेला श्री वल्लभ मूर्छाने वश थया अने तेमना पण अंगना जन्यथी कामाग्नि श्रीअंगे उठवा लागी ॥२६॥ पछी श्री गोकुलनाथजी नी मूर्छावली अने सुभट पार्वतीजी नां अंग मां बहु सुभटो ने जोईने अने त्यां

रणसंग्राम प्रिय छे जेमने एवा पार्वती ने जोईने जेमनो मित्र कामदेव छे, एवा एक श्री वल्लभ आकुल व्याकुल थया ॥२७॥ मस्तक ना सीमंतरूप भाला थी अत्यन्त दारण सारा नादथी भालना चंद्रस्वरूप मां चक्र थी आ पार्वती बहूजी स्वामिनीना कामयुद्ध मा युद्ध कर्युं ॥२८॥ **सिंदुर कलीना अगन्यास्त्रो** के जे भाल (कपाल) ना भाग मां आवेला छे तेमनाथी काजल रूप भालाओ थी, नेत्रनां जलादि जनारा ईक्षण रूप बाणोथी अने भ्रकुटी रूप धनुषो थी, श्री पार्वती बहूजीए (श्री बहूजीए) श्री वल्लभवर साथे युद्ध कर्युं ॥२९॥ कर्णना कुंडलो धरेणांना पासाथी नासिकानी नालना गोलकोथी, अधरना स्मित रूप मोहनास्त्रो थी, अत्यन्त दारुण युद्ध कर्यु ॥३०॥ गलस्थल रूप तापदायक बाणोथी ऊंचा खंभाना मुंडेरोथी, नागपासो थी कर ना चक्रोथी, कंठ ना हार रूप सर्पास्त्रो थी युद्ध कर्यु ॥३१॥ उरोज स्थल ना मोहरूप गोलाथी उदरनी रोमावली रूप बाणोथी नैनाभिनालना बाणोथी एक युद्ध कर्यु ॥३२॥ सिंहना समान कटि ना गमन थी अथवा मदोन्मत्त हाथी नी चाल थी ने सारी चित्र विचित्र रज्जु समान पादथी युद्ध कर्यु ॥३३॥ ते श्री पार्वती बहूजी श्री स्वामिनी ना अंगो अंग मां बीजा बहु शूरवीर कामना नायको युद्ध करनारा छे, ते बधा म्हारा थी शी रीते वर्णवी शकाय ? ॥३४॥ ते बन्ने दंपती ना मंजीर, किंकिणी अने सुन्दर कंकण विगेरे अलंकार रूप वाद्यो नो अनेक प्रकारे प्रितकर त्यां रंगयुद्ध मां घोष (नाद) थयो ॥३५॥ श्रेष्ठ वस्त्र रूप धजाओ थी वधु श्री पार्वती बहूजी ना वस्त्र रूप पताकाओ थी श्री यमुना किनारे ज्यां वास छे ते श्री गोकुल मां प्रिय रंग संग्राम शोभवा लाग्यो ॥३६॥ पछी श्री गोकुलनाथे विचार्यु के हुं आ प्रिय युद्ध मां एकलो छुं, अने योद्धाओ बहु छे, तेथी ते पार्वती स्वामिनीने प्रिय श्री वल्लभ कहेवा लाग्या ॥३७॥

इति श्री गोकुलवासी माहावदास विरंचित श्री सज्जन मंडन ग्रंथे चौदहवां अध्याय सम्पूर्ण ॥१४॥